मीन लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को **'बीज'** कहा है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दिया परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अत: इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सकें।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। लग्न बारह है, ग्रह नौ हैं, फलत: 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनी। प्रत्येक ग्रह की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहत् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है– **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलत: ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उस पर भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की **द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664**

प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेंगी। ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनियां में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।

एक छोटा-सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगललक्ष्मी योग'** का ले सकते हैं। क्या गुरु+चन्द्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक-सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देगीं!!! गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक-सा नहीं होगा? गजकेसरी योग की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेला गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि **मकरलग्न** में **गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर गुरु छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चन्द्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि उन्होंने फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पाराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष सॉफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एव **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह 'मीनलग्न' की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मीनलग्न में मां आनन्दमयी, सन्त तुकाराम, स्वामीरामतीर्थ परमहंस, विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, पूर्वगृहमंत्री बूटासिंह, मुख्यमंत्री भजनलाल, राजकुमारी मार्गरेट, राजनेता बाबू जगजीवनराम, रोबर्ट कैनेडी, किंग जार्ज पंचम, सुधाकर राव नायक, आइजन हावर जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मीनलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। मीनलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30°) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत

किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों, फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

एक और बड़ा फायदा इन पुस्तकों के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियों को यह है कि संधिगत लग्न में प्राय: दो जन्मकुण्डलियों के बीच व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है? कई बार एक जातक की दो-तीन प्रकार की कुण्डलियों में भी व्यक्ति भ्रमित हो जाता है? किसे सही माने? ऐसा व्यक्ति प्राय: भिन्न-भिन्न ज्योतिषियों के पास जाता है और भिन्न-भिन्न बातों से, फलादेश से व्यक्ति पूर्णत: Confused हो जाता है। ऐसे में यह पुस्तक एक दीप शिखा का कार्य करेगी। आप प्रत्येक कुण्डली को लग्न के हिसाब से अलग-अलग भावों की ग्रहस्थिति-जन्य कसौटी पर कस कर देखें। आपको स्वत: ही सही रास्ता मिल जायेगा। आपको पता चल जायेगा कि आपकी सही जन्मकुण्डली, सही लग्न कौन-सा है? यदि आपको इस प्रकार के संकट से मुक्ति मिलती है तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हो गया।

इस प्रकार के प्रयासों से आम, आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम 'सृष्टि' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 250 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "कर्कलग्न" के अन्तर्गत जन्में डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां अनेक सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाये जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि युग पुरुष के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम्
   –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक "ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वाग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1

संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होए, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[1] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसे जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[2]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करें अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

---

1. एकाष्टकायां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्-तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1
2. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
3. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
4. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[1]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[3]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिषशास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[4] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[5]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसापूर्व 1200 का है।

---

1. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
2. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
3. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
5. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई, पृ. 90
6. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्,
तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते।[1] इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[2]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[3]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रर्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[4]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चन्द्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय–अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[5]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान–विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं,

---

1. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3
2. ज्योतिर्निबन्ध–श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृ. 1
3. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृ. 2
4. जातकसार दीप-चन्द्रशेखरन् (पृ. 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
5. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृ. 550

पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहायं पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जनसम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृ. 17
2. बृहत्संहिता [redacted] सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/24
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
   तथा सांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उस ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है। इस दिव्य-ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह—(प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिषशास्त्रत बिना द्विजः।।

—वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नेमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है।।5।।

इन्दुः सर्वत्र बीजाअभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर **लावणी** में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्में मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता **वृषभलग्न**।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

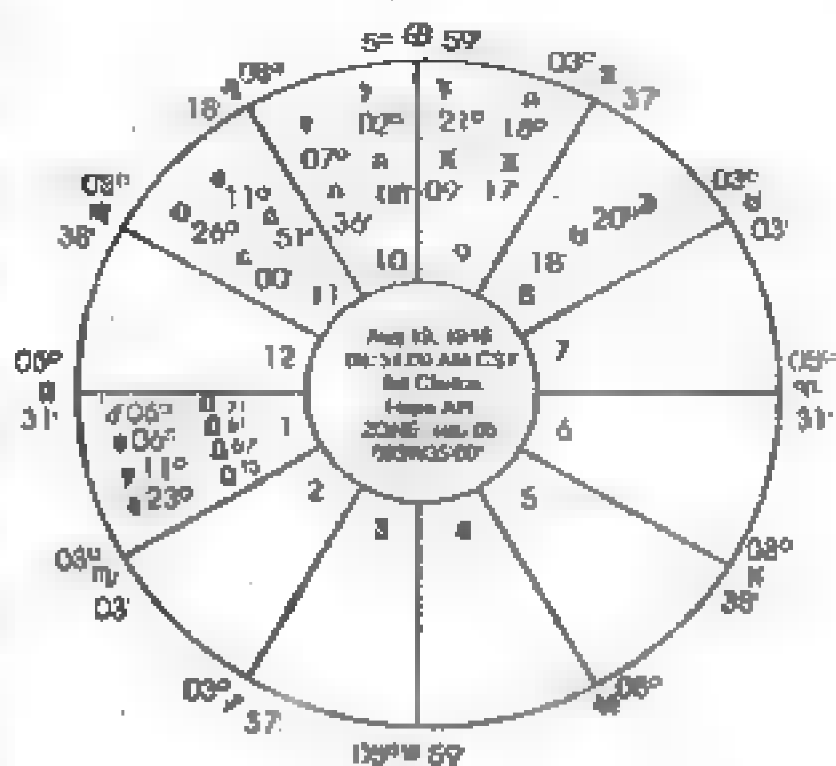
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनुलग्न
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

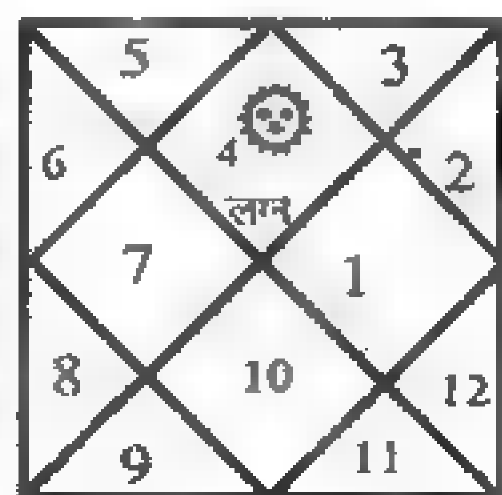
❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का





3.30 से 5.30 A.M.
7.30 से 9.30
5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय
3.30 से 1.30
9.30 से 11.30
11.30 से अर्धरात्रि 1.30
दोपहर 1.30 से 11.30
सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.
1.30 से 3.30
1.30 से 3.30
5.30 से 3.30
5.30 से 3.30 A.M.

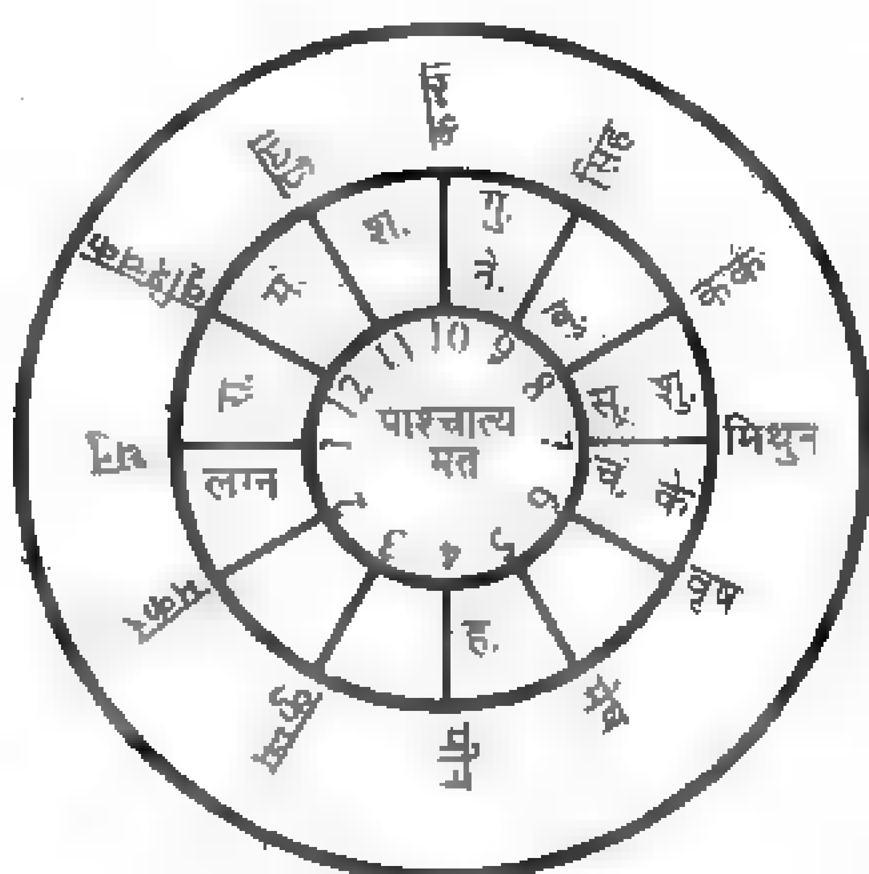
भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

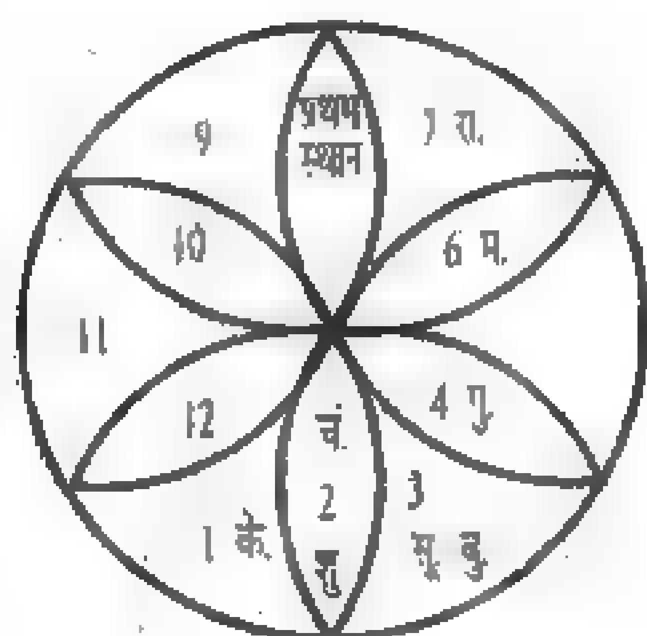
प्रथम स्थान 8 लग्न
9
7 रा.
10
6
11
5 श.
चं. 2
12
4 गु.
शु.
1 के.
3 सू. बु.

बुध मिथुन च.शु. सू. पु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि कन्या मं.	तुला राहु	धनु वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सू. बु.
कुम्भ	बेग्लूर		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

चन्द्र 3 सूर्य 5 शुक्र 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17





क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती है। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का विशेष महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोगांनि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

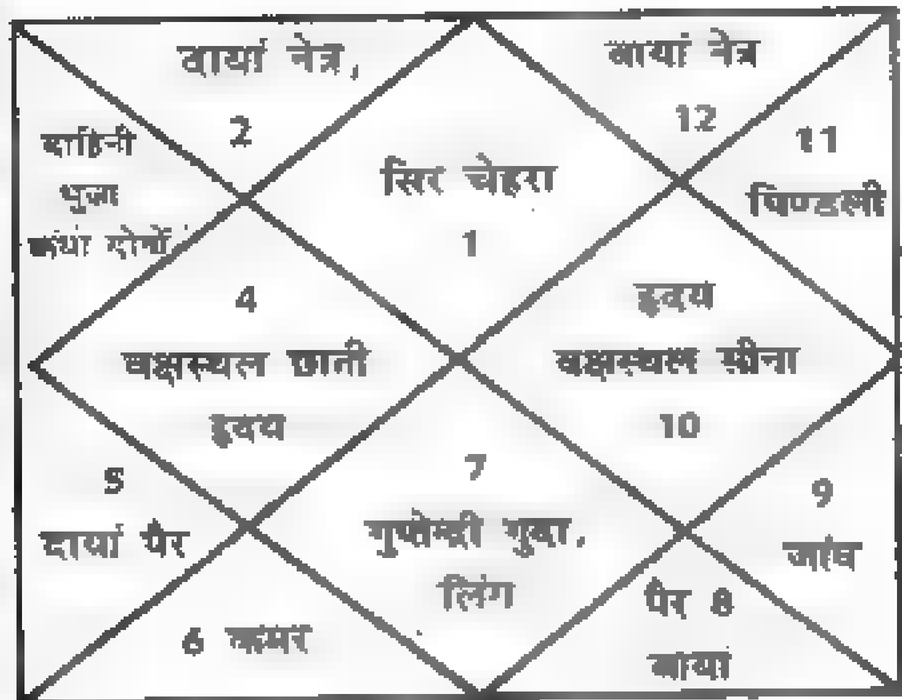
जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

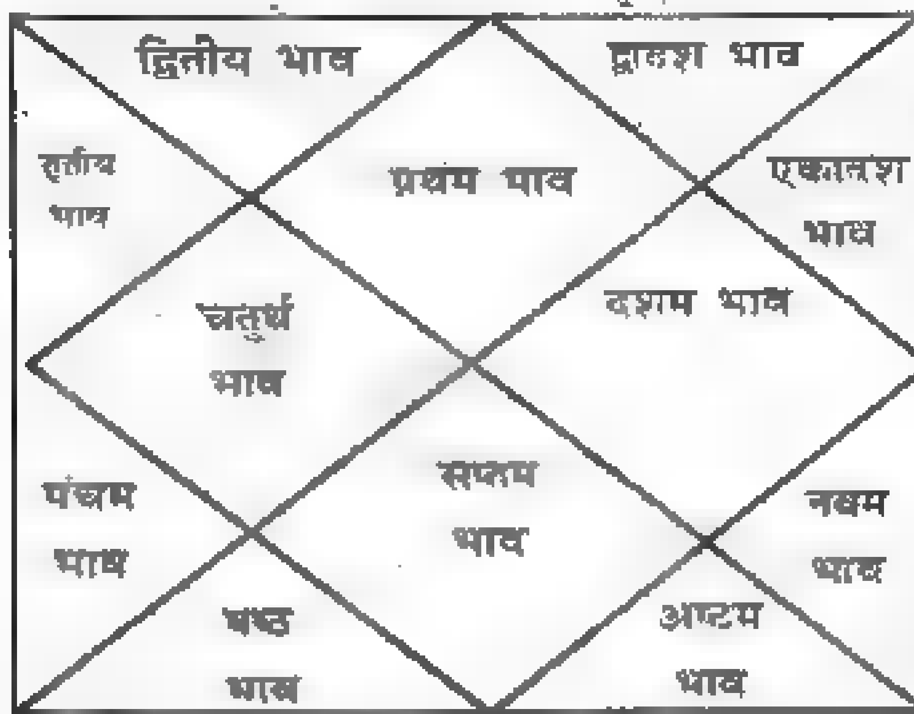
जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

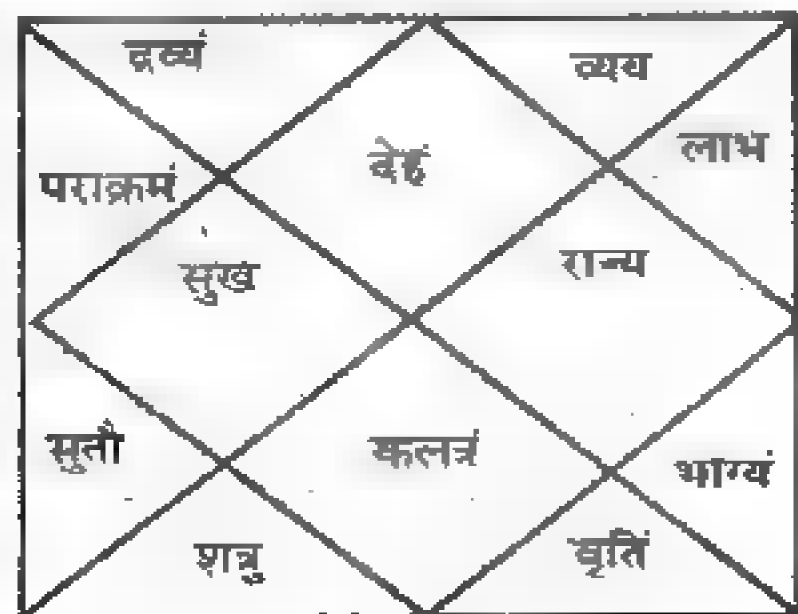


जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है।



अत: अकेले लग्न कुण्डली पर - यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।



देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययौ लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पावनपत्र मिथ्या।।

बिना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

ज्योतिविवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।



मीनलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, राज्येश	–	गुरु
2.	धनेश, भाग्येश	–	मंगल
3.	पराक्रमेश, अष्टमेश	–	शुक्र
4.	पंचमेश	–	चंद्र
5.	षष्ठेश	–	सूर्य
6.	सप्तमेश, सुखेश	–	बुध
7.	लाभेश, खर्चेश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5–चंद्र, 9–मंगल
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6–सूर्य, 8–शुक्र, 12–शनि
10.	केन्द्राधिपति	–	1–गुरु, 4, 7–बुध, 10–गुरु
11.	पणफर के स्वामी	–	2–मंगल, 5–चंद्र, 8–शुक्र, 11–शनि
12.	आपोक्लिम	–	3–शुक्र, 6–सूर्य, 9–मंगल, 12–शनि
13.	त्रिकेश	–	6–सूर्य, 8–शुक्र, 12–शनि
14.	उपचय के स्वामी	–	3–शुक्र, 6–सूर्य, 10–गुरु, 11–शनि
15.	शुभ योग	–	1. चंद्र, 2. मंगल 3. मंगल+गुरु
16.	अशुभ योग	–	1. शुक्र, 2. सूर्य, 3. बुध
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. चंद्र+गुरु, 2. मंगल+गुरु
19.	राजयोगकारक	–	गुरु, योगकारक-चंद्र एवं मंगल

20. **मारकेश**	–	शनि और बुध मारकेश
21. **पापफलद**	–	सूर्य और बुध परमपापी-शनि

विशेष-मीनलग्न वालों के लिये मंगल मारकेश होकर भी स्वयं मारक का कार्य नहीं करता। मुख्य मारकेश शनि होगा तथा सहायक मारकेश बुध होगा।

❑❑❑

लघुपाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मीनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

मंद शुक्रांशुभत्सौम्याः पापा भौमविधू शुभौ।
महिसुतगुर्वोर्योगे मारकश्चैव भूसुतः॥61॥
मारकान्कारकान्वीक्ष्य मंदाद्याः सन्ति पापिनः।
इत्यूह्यानि फलान्येवं बुधैस्तु झषजन्मनः॥62॥

''मारकश्चैव'' इन शब्दों की जगह ''कारणेनैव'' और ''मारकान्कारकान्वीक्ष्य'' इन पद की जगह ''कारकाः कारकान्वीक्ष्य'' और ''मारको मारकाभिख्या'' इस प्रकार पाठ भेद हैं।

स्पष्टीकरण–मीनलग्न हो तो शनि, शुक्र, रवि, बुध अशुभफल देते हैं। मंगल और शुक्र शुभफल देते हैं। मंगल गुरु का योग राजयोग होता है। मंगल स्वयं मारक नहीं बनता। शनि आदि करके अशुभग्रह मारक लक्षणों से युक्त हो तो वे मारक होते हैं। मीनलग्न में जन्म हो तो ज्ञात्याओं ने इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना चाहिये।

मीनलग्न हो तो मंगल चंद्रमा शुभफल देते हैं। ऐसा कहने का कारण मंगल धनेश और नवमेश होता है और चंद्रमा पंचमेश होता है। यही है। मंगल गुरु योग राजयोग कारक होता है यह कहने का हेतु गुरु लग्नेश और दशमेश है और मंगल धनेश है और नवमेश है–यही है। वस्तुतः मीनलग्न में गुरु के तरफ महत्त्व के दो अधिकार आते हैं, एक लग्नाधिपति और दशमाधिपति का, ये दोनों स्थान अर्थात् कुंडली में अति महत्त्व के हैं और इस प्रकार मीनलग्न के लिए अकेले गुरु को श्रेष्ठता मिलनी चाहिए परन्तु ''केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः'' इस वचन के अनुसार उसे शुभत्व प्राप्त नहीं होता। मात्र यह भाग्याधिपति मंगल से युक्त होने पर राजयोग करता है। मीनलग्न को शनि एकादशेश और द्वादशेश होता है, शुक्र तृतीयेश और अष्टमेश होता है। रवि षष्ठेश होता है, बुध चतुर्थेश और सप्तमेश होता है,

इसलिए ये सब ग्रह अशुभफल देने वाले होते हैं। मीनलग्न की वास्तविकता से चंद्रमा को छोड़कर अन्य एक भी ग्रह शुभ नहीं होता इसका कारण क्रमशः इस प्रकार है।

रवि षष्ठेश होता है। मंगल धनेश मारक स्थान का स्वामी होता है, बुध केन्द्रेश (चतुर्थ सप्तम स्थानों का स्वामी) होता है, (बुधस्तदनु चन्द्रोअपि), गुरु लग्नेश और दशमेश होता है। शुक्र तृतीयेश अष्टमेश होता है, शनि एकादशेश और व्ययेश होता है। इस प्रकार किसी न किसी कारण वश हर एक ग्रह दूषित है। शेष बचा चंद्रमा वह शुभ है। श्लोक 8 के अनुसार धनेश यदि अन्य शुभ स्थान का स्वामी हो तो शुभफल देता है इस प्रकार मंगल शुभफल दे सकेगा। केन्द्राधिपत्य दोष सिर्फ सप्तम स्थान पर ही लागू होती है। इसलिए गुरु मंगल इनका योग उत्तम राजयोग हो सकता है। यहां पर मंगल स्वयं मारक नहीं बनता। ऐसा स्पष्ट रीति से कहने का कारण इतना ही है कि मंगल द्वितीयेश होने पर भी शुभ स्थान का स्वामी भी होता है इसलिए शुभफल देने वाला होता है।

मीनलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**—मंगल नैसर्गिक पापग्रह है परन्तु वह नवम (प्रबल त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभफल देने वाला होता है। यद्यपि वह मारक स्थान का स्वामी है फिर भी श्लोक 8 के अनुसार शुभफल देने वाला होता है।
2. **शुभ योग**—चंद्रमा नैसर्गिक शुभग्रह है और यहां पर पंचमेश (त्रिकोण का स्वामी) होने से शुभफल देने वाला होता है।
3. **शुभ योग**—नवमेश मंगल का दशमेश गुरु से योग हो तो (श्लोक 11 के अनुसार वह अशुभ है) शुभफल देने वाला होता है।

मीनलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**—शनि नैसर्गिक पापग्रह है और वह एकादेश होने के नाते श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है। इसके सिवाय वह द्वादशेश भी है। शनि अशुभ होकर अशुभ फलदायक है।
2. **अशुभ योग**—शुक्र नैसर्गिक शुभग्रह है परन्तु वह तृतीय स्थान का स्वामी है और श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है। शुक्र अष्टम स्थान का भी स्वामी है। वह अशुभफल देने वाला होता है।
3. **अशुभ योग**—सूर्य नैसर्गिक पापग्रह है। वह षष्ठेश होने के नाते श्लोक 7 के अनुसार अशुभ है और अशुभफल देने वाला है।

4. **अशुभ योग**–बुध नैसर्गिक शुभग्रह है। वह सप्तम (मारक) केन्द्र का स्वामी है और चतुर्थ-सप्तम केन्द्रों का स्वामी होने से शुभ है और अशुभफल देने वाला होता है।

निष्फल योग–1. मंगल-बुध;

सफल योग–1. चंद्रमा-गुरु, 2. मंगल-गुरु

□□□

मीनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	मीन
2.	लग्न चिह्न	–	पूंछ और मुख मिली हुई दो मछलियां
3.	लग्न स्वामी	–	गुरु
4.	लग्न तत्त्व	–	जल तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	–	उत्तर
7.	लग्न लिंग व गुण	–	स्त्री, सतोगुणी
8.	लग्न जाति	–	ब्राह्मण
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	सौम्य स्वभाव, कफ प्रवृति
10.	लग्न का अंग	–	चरण युगल
11.	जीवन रत्न	–	पुखराज
12.	अनुकूल रंग	–	पीला
13.	शुभ दिवस	–	गुरुवार/वीरवार
14.	अनुकूल देवता	–	विष्णु
15.	व्रत, उपवास	–	गुरुवार/वीरवार
16.	अनुकूल अंक	–	तीन
17.	अनुकूल तारीखें	–	3/12/21/30
18.	मित्र लग्न	–	कर्क, वृश्चिक
19.	शत्रु लग्न	–	मेष, सिंह, धनु

20. **व्यक्तित्व** – अध्यात्म प्रेमी, भावुक, अध्ययनशील मैत्रीवृत्ति

21. **सकारात्मक तथ्य** – विनम्रता सज्जनशीलता, कल्पनाप्रिय

22. **नकारात्मक तथ्य** – अधैर्यशीलता, लापरवाही, अनिश्चिन्तता

❑❑❑

मीनलग्न के स्वामी बुध का वैदिक स्वरूप

वैदिक साहित्य में गुरु का नाम अनेक मंत्रों में आया है।[1] थिबो का कहना है कि यह गुरु ग्रह का नाम है, चिन्त्य है।[2] 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' में गुरु के जन्म का उल्लेख मिलता है।

गुरुः प्रथमं जायमानस्तिष्यं नक्षत्रमभिसम्बभूव।
श्रेष्ठो देवानां पृतनासु जिष्णुः दिशो नु सर्वा अभयं नो अस्तु॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/1/1/5)

अर्थात् जब गुरु पहले प्रकट हुआ वह तिष्य (पुष्य) नक्षत्र के पास था। शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार कभी पुष्य तारा गुरु ग्रह की ओट में हो गया होगा। ज्योतिष की दृष्टि से यह संभव है। अपनी गति के कारण जब दो चार घंटे में गुरु पुष्य से पृथक् हुआ होगा तो लोगों ने समझा होगा कि गुरु का जन्म हुआ। उस समय गुरु पुष्य के निकट रहा होगा।[4]

तिष्य शब्द का अर्थ पुष्य नक्षत्र है और पुष्य के देवता गुरु कहे गये हैं। ज्योतिष ग्रंथों में गुरु पुष्य योग अत्यधिक सुखद माना गया है। चंद्रमा, तारा एवं गुरु के संदर्भ में जो पौराणिक आख्यान है उस विषय में ऋग्वेद में वर्णन आता है कि गुरु ने अपनी पत्नी जुहू छोड़ी, सोम राजा ने उसे पुनः भेजा, मित्रावरुण ने समर्थन किया और अग्नि ने हाथ पकड़कर स्वयं पहुंचाया। तब सोम द्वारा लायी जाया को गुरु ने पुनः स्वीकार कर लिया।

तैत्तिरीय संहिता में शुक्र व चन्द्रादि ग्रहों के साथ गुरु ग्रह का नाम भी आया है।

---

1. गुरु अतिअदर्यो अर्हाद् ऋग्वेद अ. 2 मण्डल 23/15
2. ऐस्ट्रोनोमी ऐस्ट्रोलजी एण्ड मैथमेटिक-पृ. सं. 6
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास डॉ. गोरख प्रसाद, पृ. 31
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास-डॉ. गोरख प्रसाद, पृ. 32

'वस्व्यसि रुद्रास्यदितिरस्यादित्यासि शुक्रासि चंद्रासि बृहस्पतिस्त्वा सुम्ने कृण्वतु'[1]

अर्थात् हे सोम को खरीदने वाले तू वस्वी है, अर्थात् वसु आदि देवों का रूप है। रुद्र है, अदिति है, आदित्य है, शुक्र है, चन्द्र है, गुरु है। तू सुख से रहे।

ऋग्वेद में गुरु के महत्व को स्पष्ट करते हुए यह कहा गया कि–"गुरु प्रथम महान् प्रकाश के अत्यन्त उच्च स्वर्ग (कक्ष) में उत्पन्न हुआ।[2]"

गुरु ग्रह को देवगुरु, आंगिरस, गुरु तथा जीव आदि नामों से कहा गया है। यह सम्पूर्ण नक्षत्रमंडल का लगभग 12 वर्षों में भ्रमण पूरा करता है। ग्रहलाघव के अनुसार यह अस्त होने के बाद 1 महीने के पश्चात् उदित होता है। उसके बाद लगभग 4 महीने पश्चात् वक्री होता है तथा चार मास वक्री होने के पश्चात् मार्गी होता है तथा पुनः 4 महीने बाद अस्त हो जाता है। यह इसका मध्यम मान है। यह सूर्य से अधिक दूर है तथा सूर्य के ही प्रकाश से प्रकाशित है। इसे शुभग्रह माना गया है।

ऋग्वेद के इस आख्यानक के अनुसार इसका अर्थ यह है कि राजा सोम अर्थात् चंद्रमा का प्रत्येक 27वें दिन पुष्य नक्षत्र से संयोग होता है किन्तु गुरु उसे एक बार छोड़ने के पश्चात् लगभग 12 वर्ष पश्चात् पुनः उस नक्षत्र (पुष्य) में आता है। इस बीच में मित्र, वरुण और अग्निदेव उससे कई बार मिल लेते हैं। ये देव सम्भवतः सूर्य, बुध, शुक्र हैं जो प्रत्येक वर्ष में एक बार पुष्य नक्षत्र से संयुक्त होते हैं अर्थात् पुष्य नक्षत्र के सीध में आ जाते हैं। वेदों में गुरु को ब्रह्म अथवा ज्ञान का प्रतीक भी कहा गया है। पुष्य नक्षत्र बुद्धि का प्रतीक है तथा गुरु ज्ञान का अतः बुद्धि में ज्ञान यदा-कदा उदित होता है जबकि मन, काम, अर्थ आदि प्रायः आते रहते हैं। यही गुरु, तारा और चंद्रमा की कथा है।

गुरु के पूजन, हवन तथा शांतिकर्म में प्रयुक्त होने वाला वैदिक मंत्र इस प्रकार है–

ॐ गुरु अति यदर्यो अर्हा द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यदीदयच्छवस् ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

❑❑❑

---

1. तैत्तिरीय संहिता 1/2/5
2. गुरुः प्रथमञ्जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्

–ऋग्वेद 4/50/4
–अथर्ववेद 20/88/4
–तैत्तरीय ब्राह्मण 2/8/2

मीनलग्न के स्वामी गुरु का पौराणिक स्वरूप

देवगुरु गुरु पीत वर्ण के हैं। उनके सिर पर स्वर्णमुकुट तथा गले में सुन्दर माला है। वे पीत वस्त्र धारण करते हैं तथा कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चारों हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र और वरदामुद्रा सुशोभित है।

महाभारत आदिपर्व और तै. स. के अनुसार गुरु महर्षि अंगिरा के पुत्र तथा देवताओं पुरोहित हैं। ये अपने प्रकृष्ट ज्ञान से देवताओं को उनका यज्ञ-भाग प्राप्त करा देते हैं। असुर यज्ञ में विघ्न डालकर देवताओं को भूखों मार देना चाहते हैं। ऐसी परिस्थितियों में देवगुरु गुरु रक्षोघ्न मंत्रों का प्रयोग कर देवताओं की रक्षा करते हैं तथा दैत्यों को दूर भगा देते हैं।

इन्हें देवताओं का आचार्यत्व और ग्रहत्व कैसे प्राप्त हुआ, इसका विस्तृत वर्ण स्कन्द पुराण में प्राप्त होता है। गुरु प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान् शंकर की कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् शंकर ने उन्हें देवगुरु का पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करने का वर दिया। (श्रीमद. 5/22/15)

गुरु एक-एक राशि पर एक-एक वर्ष रहते हैं। वक्रगति होने पर इसमें अंतर आ जाता है।

ऋग्वेद के अनुसार गुरु अत्यन्त सुन्दर है। इनका आवास स्वर्णनिर्मित है। ये विश्व के लिए वरणीय हैं। ये अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें सम्पत्ति तथा बुद्धि से सम्पन्न कर देते हैं, उन्हें सन्मार्ग पर चलाते हैं और विपत्ति में उनकी रक्षा भी करते हैं। शरणागतवत्सलता का गुण इनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। देवगुरु गुरु का वर्ण पीत है। इनका वाहन रथ है, जो सोने का बना है तथा अत्यन्त सुखकर और सूर्य के समान भास्वर है। इसमें वायु के समान वेग वाले पीले रंग के आठ घोड़े जुते रहते हैं। ऋग्वेद के अनुसार इनका आयुध सुवर्णनिर्मित दण्ड है।

देवगुरु गुरु की एक पत्नी का नाम शुभा और दूसरी का तारा है। शुभा से सात कन्याएं उत्पन्न हुई भानुमती, राका, अर्चिष्मति, महामती, महिष्मती, सिनीवाली और हविष्मती। तारा से सात पुत्र व एक कन्या उत्पन्न हुई। उनकी तीसरी पत्नी ममता से भरद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। गुरु के अधिदेवता इंद्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा है।

गुरु, धनु और मीन राशि का स्वामी है। इनकी महादशा सोलह वर्ष की होती है। इनकी शान्ति के लिये प्रत्येक अमावस्या को गुरु का व्रत करना चाहिए और पीला पुखराज धारण करना चाहिए। ब्राह्मणों को दान में पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि और छत्र देना चाहिए। इनकी शान्ति के लिए वैदिक मंत्र 'ओइम् बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।'' पौराणिक मंत्र–''**देवानां च ऋषीणां च गुरुं कान्चसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।**'' बीज मंत्र–'**ओइम् ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।**' तथा सामान्य मंत्र–'**ओइम् बृं बृहस्पतये नमः**' है। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्या काल तथा जप संख्या 11000 है।

❑❑❑

गुरु का खगोलीय स्वरूप

गुरु एक पीत वर्ण का ग्रह है। इसका सौर मंडल में पांचवां स्थान है। यह सूर्य से लगभग 77,80,00000 किमी. की दूरी पर है और लगभग 11 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। पृथ्वी से बहुत दूर होते हुए भी गुरु अत्यधिक दैदीप्यमान् दिखाई देता है। यह सौर मण्डल का सम्राट ग्रह है। अतः शास्त्रों में इसके लिए "गुरु" तथा "गुरु" नामों का प्रयोग किया गया है। इसका व्यास 1,43,640 किमी. है। गुरु यदि भीतर से खोखला हो तो पृथ्वी जैसे 1600 पिण्ड उसमें समा सकते हैं। इसका गुरुत्व भी पृथ्वी से 317 गुणा है। यदि कोई व्यक्ति पृथ्वी पर 77 कि.ग्रा. भार का हो तो "गुरु" पर जाकर उसका भार 22 टन हो जायेगा। गुरु के चंद्रमाओं की संख्या तेरह है। गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद वक्री होता है। उदय के 129 दिन बाद वक्री होता है। वक्र के 128 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 129 दिन बाद पुनः अस्त होता है।

गुरु के अतिरिक्त गुरु, देवगुरु, वागीश, अंगिरा, जीव आदि नाम भी इसके पर्याय माने गये हैं।

गुरु की गति—गुरु अपनी कीली पर 9 घंटा 55 मिनट में एक चक्कर देता है। यह एक सैकंड में 8 मील चलता है तथा सूर्य की परिक्रमा 4332 दिन 35 घटी 5 पल में पूरी करता है। स्थूल तौर पर यह 12 या 13 महीनों में एक राशि, 160 दिन में एक नक्षत्र, 43 दिन एक चरण पर रहता है।

गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद उदय होता है। उदय के 128 दिन बाद वक्री होता है। वक्र के 120 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 128 दिन बाद पुनः अस्त हो जाता है।

गणितागत स्पष्टीकरण से चार राशि या 120 डिग्री अंश के पीछे रहने पर गुरु वक्री हो जाता है। सूर्य से चार राशि 120 डिग्री अंश के आगे रहने पर यह मार्गी होता है। वक्री अवस्था में 12 डिग्री अंश तक पीछे हटता है तथा चार मास तक वक्री रहता है तथा पुनः 8 मास तक मार्गी रहता है। जब इसकी गति 14/4 की होती है,

तब यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है। गुरु 45 दिन तक अतिचारी रहता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी पर समचारी, चौथी पर मंदचारी, पांचवीं और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अतिवक्री, नवमी और दशमी पर कुटिल और ग्यारहवीं तथा बारहवीं राशि पर पुनः शीघ्रगामी हो जाता है। वक्री होने के पांच दिन आगे या पीछे यह स्थिर रहता है।

□□□

मीनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मीनलग्न का स्वरूप

मीनौ पुच्छास्यसंलग्नौ मीनराशिर्दिवाबली॥22॥
जली सत्वगुणाढ्यश्च स्वस्थो जलचरो द्विजः।
अपदो मध्यदेही च सौम्यस्था ह्युभयोदयी॥23॥
सुराचार्याधिपश्चेति राशीनां गदिता गुणाः।
त्रिंशद्भागात्मकानां च स्थूलसूक्ष्मफलाय च॥24॥

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 24

मुख पुच्छ मिलित दो मछली, दिनबली, जलतत्व, सत्वगुणी, स्वस्थ जलचारी, विप्रजाति पदहीन, मध्यदेह, उत्तरदिक् स्वामी, उभयोदय है और इसका स्वामी गुरु है। इस प्रकार 30 अंश से युक्त इन 12 राशियों के स्वरूप आदि मैंने स्थूल और सूक्ष्मफल विचार के लिए कहा है॥24-24॥

जलचरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः,
समरुचिरशरीरस्तुंगनासो बृहत्कः।
अभिभवति सपत्नां स्त्रीजितश्चारुदृष्टि
र्द्युतिनिधि धनभोगी पण्डितश्चान्त्यराशौ॥12॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 12

यदि मीन राशि में चंद्रमा हो तो मनुष्य पानी से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के व्यापारादि से धन का भोग करने वाला, अपनी स्त्री व अपने पारिवारिक उपयोगार्थ प्रयोज्य वस्त्राभूषणादि के प्रति विशेष ध्यान देने वाला, समान व रुचिर शरीर वाला ऊंची नाक वाला, बड़े सिर वाला, शत्रुओं का नाशक, स्त्री से वश में होने वाला, सुन्दर आंखों वाला, तेजस्वी, गड़े धन का भागी एवं पण्डित अर्थात् विद्वान होता है।

मीने विलग्नोपगतेऽभिजातः प्रभूतवित्तद्रविणोऽल्पकेशः।
त्यागात्मवान् शास्त्रविशारदश्च च दीर्घसूत्रो न च मन्दबुद्धि॥12॥

—वृद्धयवनजातक अ.24/श्लो.12/ पृ.289

यदि मीनलग्न में जन्म हो तो मनुष्य कुलीन, खूब धन व विद्या से परिपूर्ण, कम बालों वाला, त्यागी स्वभाव वाला, आत्माभिमानी, शास्त्रों का विशारद, कम सोने वाला, मन्दबुद्धि के अभाव वाला होता है।

मीनोदयेऽल्परतिरिष्टजनानुकूल
तेजोबलप्रचुरधान्यधनश्च विद्वान्

—जातक पारिजात श्लो.11/पृ.678

मीनः स्त्री सहवास की कम इच्छा, अपने प्रिय जनों के अनुकूल, तेज और बल से युक्त, प्रचुर धान्य (अधिक मात्रा में अन्न का स्वामी) और धन से युक्त, विद्वान व्यक्ति होता है।

मधुपिङ्गाक्षो गौरो मेधावी सत्क्रियारतिज्ञश्च।
सुखभागी मीनाद्ये जलचरयुगले विनीतश्च॥

—सारावली पृ. 466/श्लो. 10

यदि जन्म लग्न में मीन राशि व मीन राशि का पहिला द्रेष्काण हो तो जातक शहद के समान पिङ्गल नेत्र वाला, गौरवर्ण, मेधावी, शुभ कार्य कर्ता, रति (काम) ज्ञाता, सुखी और नम्र होता है।

मीनलग्नोदये जातो रत्नकाञ्जनपूरितः।
अल्पकामः कृशाङश्च दीर्घकालिविचिन्तक॥

—मानसागरी अ. 1/श्लो. 12

मीनलग्न वाला जीव धन-सम्पदायुक्त, अल्पकामी, चिन्तनशील-विचारक, स्वार्थ साधक, चतुर, शरीरन प्रारूप सहित तथा अनेक कलाओं से जन जीवन युक्त एवं जीवनीय स्तर मानद वर्ग का बने।

भोजसंहिता

मीनलग्न का स्वामी गुरु है। गुरु देवगुरु माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति, गौरवर्ण, कांचन, देह, मछली के समान आकर्षक व सुन्दर नेत्र वाले, ललाट चौड़ा चेहरा, लम्बे कद के मालिक होते हैं।

यह लग्न दिवाबली, जलतत्व प्रधान, सत्वगुणी है। पूर्वाभाद्रपद के अंतिम चरण में जन्म व्यक्ति धार्मिक बुद्धि से ओतप्रोत, मेहमान प्रिय, सामाजिक अच्छाइयों व नियमों का पालन करने वाले, बातचीत में प्रवीण होते हैं। मीन राशि वाले व्यक्ति कूटनीति, रणनीति व षडयंत्रकारी मामलों में एक प्रतिशत भी रुचि नहीं लेते। इनका प्राकृतिक स्वभाव उत्तम दायलु व दानशीलता है।

सामान्यता मीनलग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करके आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इसमें रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करके इनको शान्ति एवं संतुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल और भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अत: सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अत: इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीक्ष्ण रहेगी अत: विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलत: अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान अप्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परंतु युवावस्था के बाद

सुखेश्चर्य एवं धन वैभव एवं शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय-समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्मान करेंगे। इससे आपको आत्मिक शान्ति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्चर्य से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

मीनलग्न पुरुष की एक विशेषता है कि इनको केवल न्याय ही की बात पर क्रोध आता है। ये पर दु:खकातर हैं। दूसरे की भलाई व कार्यसिद्धि हेतु स्वयं को खतरे में डाल देते हैं। यह आपके लिए उचित नहीं।

यदि आपका जन्म 14 मार्च और 12 अप्रैल के बीच में हुआ है तो 16 वर्ष से ही भाग्योदय आरम्भ हो जाता है। 32 वर्ष में पूर्ण भाग्योदय होता है। आप कला, विज्ञान व साहित्य में रुचि लेंगे। आप रसिक हृदय व विलास प्रिय होने पर भी स्वाभिमान के कारण नीचे गिरने की प्रवृत्ति को रोकते हैं। आपमें अधिकारी होने की भावना विशेष रहेगी। हल्का काम आपको पंसद नहीं है। आप मिलनसार व यार बाश मित्रों की गिनती में है। आप दूसरों का बहुत आतिथ्य करते हैं। स्वयं अच्छा भोजन करने के शौकीन होते हैं तथा दूसरों को भी दावत देने का शौक होता है।

असली मित्र आपके बहुत थोड़े हैं। एक मित्र जो किसी कारणवश आपका शत्रु हो जाए उसके द्वारा भारी आघात पहुंचने का खतरा है? सतर्क रहें। यदि आपके हाथ में मच्छरेखा है तो ऐसा संभव नहीं।

मीन राशि का चिह्न ''मुख-पुच्छ मिलित दो मछली'' हैं। आपको जल से निकली हुई वस्तु नमक, हीरे, जवाहरात, समुद्र पार देशों से माल मंगाने या भेजने (Export-import) से विशेष धनालाभ हो सकता है। स्त्रियों के सम्पर्क से भी आपका भाग्योदय संभव है। 32 वर्ष के बाद आपके पुत्र व नौकरों का योग बनता है। शत्रु आप से हार जायेंगे।

सही भाग्योदय हेतु गुरु रत्न पुखराज को स्वर्ण मुद्रिका में धारण करें।

नक्षत्रानुसार फलादेश

दी	दू थ झ ञ	दे दो च ची
पूर्वाभाद्रपद-1	उत्तराभाद्रपद-5	रेवती-5

चन्द्रमा पूर्वाभाद्रपद में

उद्विग्नचित्तो धनवांस्त्वरोगी,

अजाधिके स्त्रीवजितो अदाता।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में स्थित हो तो मनुष्य क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है।

पूर्वा भाद्रपद गुरु का नक्षत्र है। इसमें स्थित होकर चंद्रमा प्रायः शुभ प्रभाव के कारण है। स्त्री विजितो संभवतया इसलिए कि स्त्री ग्रह चंद्रमा शुभता को प्राप्त होकर स्त्री के शुभ गुणों का संचार करेगा जिसके फलस्वरूप स्त्री व्यक्ति का मन मोह लेगी। उद्विग्न चित्तो क्यों कहा, यह विचारणीय है, क्योंकि गुरु का प्रभाव मन रूपी चंद्रमा पर पड़कर मन में शान्ति उत्पन्न करेगा, न कि उद्वेग।

पूर्वाभाद्रपद के चतुर्थ पाद–पूर्वा भाद्रपद के चतुर्थ पाद में यदि जन्मकुण्डली में चंद्रमा स्थित हो तो जातक भोगी होता है। नक्षत्र पाद का स्वामी स्वयं चंद्रमा बनता है जिसका खाने-पीने से विशेष संबंध है। इसलिए भोगी कहा। नक्षत्र स्वामी गुरु को खूब खाता है। तभी तो इसका पेट बढ़ा हुआ है। अतः भोगी कहना उपयुक्त है।

चन्द्रमा उत्तराभाद्रपद में

वक्ता प्रजावान् सुमुखो मृगांकेपहिर्बध्न्यभे धर्मरतोजितारिः।

यदि चंद्रमा जन्म समय उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में स्थित हो तो जातक बोलने में चतुर, संतानवान, सुंदर धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है।

उत्तराभाद्रपद शनि का नक्षत्र है। शनि एक स्त्री ग्रह है और चंद्रमा भी, इस कारण स्त्री संतान के अधिक होने की संभावना रहेगी। शनि के नक्षत्र में होने से मन (चंद्रमा) में वैराग्य का होना अनिवार्य है, इसलिए जातक त्यागी हो सकता है और इन्हीं अर्थों में धार्मिक भी। वक्ता होने आदि के लिए कोई हेतु प्रतीत नहीं होता।

यदि आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में है तो आप धार्मिक नेता व प्रसिद्ध शास्त्र व मानव प्रेमी के स्वरूप में प्रख्यात पुरुष हैं। आप प्राणी मात्र के प्रति सद्भावना रखते हैं। यदि कोई आपके साथ दुर्व्यवहार भी कर बैठता है तो भी आप उसे क्षमा कर देते हैं। मन में किसी प्रकार की गांठ नहीं रखते। आप महत्वाकांक्षी व Ambicions व्यक्ति हैं। आपकी इच्छाएं बढ़ी-चढ़ी होती हैं व मन ही मन आप उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ जाते हैं। ईमानदारी व देशभक्ति आपके चरित्र के

प्रमुख गुण हैं। आप उन गिने चुने व्यक्तियों में से हैं जिन्हें जनता आदर की दृष्टि से देखती है।

उत्तराभाद्रपद के प्रथम पाद—उत्तराभाद्रपद के प्रथम पाद में यदि चंद्रमा स्थित हो तो जातक राजा है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी सूर्य है जिसके चंद्रमा पर प्रभाव के कारण चंद्रमा में सूर्य के राज्यसत्तापरक गुण आ जायेंगे।

उत्तराभाद्रपद के द्वितीय पाद—उत्तराभाद्रपद के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य चोर होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी बुध बनता है और नक्षत्र स्वामी शनि। सम्भवतया यह चोरी का फलशनि और बुध के सम्मिलित प्रभाव का है जो चंद्रमा पड़ता है।

उत्तराभाद्रपद के तृतीय पाद—उत्तराभाद्रपद के तृतीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति पुत्र वाला होता है। यह फल मुख्यतया चंद्रमा पर नक्षत्र पाद स्वामी शुक्र के प्रभाव के कारण है। जैसा कि हम पूर्व में लिख चुके हैं शुक्र स्त्री प्रजा के साथ-साथ पुत्र प्रजा भी देता है।

उत्तराभाद्रपद के चतुर्थ पाद—उत्तराभाद्रपद के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य सुखी होता है। यहां नक्षत्र पाद स्वामी मंगल होता है। मंगल के चंद्रमा पर प्रभाव से धनादि में वृद्धि होती है। इसलिए सुख कहा।

चंद्रमा रेवती नक्षत्र में

संपूर्णदेहः सुभगोऽतिशूरः शुचिर्धनी पौष्णगते शशांके।
विज्ञेयमेतन्निरुपद्रवेभे फलं बलिष्ठे रजनीपतौ च।

यदि जन्म समय चंद्रमा रेवती नक्षत्र में स्थित हो तो जातक संपूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला, धनवान होता है। उपरोक्त नक्षत्रों में चंद्रमा की स्थिति का जो फल कहा है वह तभी पूर्ण होता है जबकि नक्षत्र पर कोई विरुद्ध प्रभाव न हो और चंद्रमा भी बलवान हो।

रेवती नक्षत्र का स्वामी बुध है जो नैसर्गिक रूप से एक शुभ ग्रह है और साथ ही साथ अपना कोई स्वतंत्र फल नहीं रखता। इसलिए इसके नक्षत्र में चंद्रमा अपने ही गुणों की उत्कृष्टता को प्राप्त होगा। चंद्रमा देह है, वह पुष्ट और परिपूर्ण होगी। चंद्रमा धन से विशेष संबंध रखता है, अतः व्यक्ति धनवान होगा। चंद्रमा जहां तक बुध के नक्षत्र में शुभ गुणों को ग्रहण करेगा उसका फल धार्मिक शुद्धि और परोपकार की वृत्ति प्राप्त होगी, क्योंकि बुध वैष्णव ग्रह है। शूरवीर क्यों कहा? यह विचारणीय है।

यदि आपका जन्म रेवती नक्षत्र के दो चरण तथा से संबंध रखता है तो आपमें मौलिक गुणों में बहुत परिवर्तन हो जाता है। फिर तो आप दबंग व पौरुषशाली की गिनती में जाते हैं। छल तथा कपट आपके जीवन में नहीं। धोखा देने में आप स्वयं डरते हैं। आप हृदय के व्यक्ति है। ऐसे जातक को क्रोध शीघ्र आता है। कोई जरा भी विपरीत बात कह तो इनसे सहन नहीं होती ऐसी हालत में ये मध्यम कद के होते हैं। दूसरों की हकूमत उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं ये क्रोधावस्था में आत्मनियंत्रण खो बैठते हैं। परन्तु क्रोध जितनी शीघ्रता से आता है उतनी शीघ्रता से चला जाता है। साहसिक कार्य व पुरुषार्थ प्रदर्शन की इनको एक ललक-सी रहती है।

रेवती के प्रथम पाद–रेवती के प्रथम पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य ज्ञानी होता है। यहां नक्षत्र पाद स्वामी बुध होता है। इसके चंद्रमा पर प्रभाव के कारण ज्ञानी कहा। ज्ञानी इसलिए भी कि रेवती नक्षत्र का स्वामी का ज्ञानी बुध ही है जिसका प्रभाव भी चंद्रमा पर पड़ेगा।

रेवती के द्वितीय पाद–रेवती के द्वितीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति चोर होता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी शनि बनता है जो चंद्रमा पर अपने प्रभाव से ऐसा फल दे सकता है।

रेवती का तृतीय पाद–रेवती का तृतीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य युद्ध में जयी होता है। शनि नक्षत्र पाद का स्वामी बनता है और बुध नक्षत्र का स्वामी है। दोनों नपुंसक है। अतः चंद्रमा की दोनों पर विजय है। इसलिए युद्ध में विजयी कहा।

रेवती के चतुर्थ पाद–रेवती के चतुर्थ पाद में यदि चंद्रमा जन्म समय में स्थित हो तो व्यक्ति क्लेश भोगने वाला होता है। यद्यपि यह पाद ऐसा है कि जिसका स्वामी गुरु है जो कि चंद्रमा का मित्र है तो भी क्लेश कहा। यहां कारण यही है कि रेवती का अन्तिम भाग गण्डान्त है जिसमें ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए शुभ नहीं होती।

❑❑❑

जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिये विशेष चार्ट

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विपद	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मींढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विपद	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तु,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प,	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 बि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26.	पूर्वा भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्वि. कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेव	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कुंभ	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मीन	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि											
3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्रमा)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/10/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ङ	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	मं.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
—	—	—	—

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.
—	—	—	—
—	—	—	—
—	—	—	—

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हु	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु.
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	—	—	—	—
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	—	—	—	—
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	—	—	—	—

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13. हस्त (चंद्रमा)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	—	—	—	—
—	—	—	—	ठ	5/23/20/0	4	चं.	—	—	—	—

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चंद्रमा)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि											
23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
—	—	—	—	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
—	—	—	—	तू	10/19/0/04	4	गु.	—	—	—	—

मीन राशि											
26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
—	—	—	—	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
—	—	—	—	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
—	—	—	—	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

मीनलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मीनलग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–11/30/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–दी
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'.

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है। ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कंजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति भोगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चंद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है एवं कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश की दशा वांछित शुभ फल नहीं दे पायेगी।

मीनलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाभाद्रपद | **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—11/30/20/0

4. वर्ण—विप्र | **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—सिंह | **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—आद्य | **9. नक्षत्र देवता**—अजपाद

10. वर्णाक्षर—दी | **11. वर्ग**—सर्प

12. लग्न स्वामी—गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—गुरु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्र | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'भोगी'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है। ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कंजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति योगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चंद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से **'उदित अंशों'** का है तथा बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। गुरु की दशा में उन्नति होगी।

मीनलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाभाद्रपद | **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—11/30/20/0

4. वर्ण—विप्र | **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—सिंह | **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—आद्य | **9. नक्षत्र देवता**—अजपाद

10. वर्णाक्षर—दी | **11. वर्ग**—सर्प

12. **लग्न स्वामी**–गुरु   13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा   15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र   17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है। ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कंजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति योगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चंद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। चंद्रमा की दशा एवं मंगल की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद   2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–11/30/20/0

4. **वर्ण**–विप्र   5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–सिंह   7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य   9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. **वर्णाक्षर**–दी   11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–गुरु   13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा   15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.   17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है। ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कंजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति योगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक

को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चंद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा अच्छा फल देगी। चंद्रमा और मंगल की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद   **2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—11/3/20/0 से 11/6/40/0

4. वर्ण—विप्र   **5. वश्य**—जलचर

6. योनि—गौ   **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य   **9. नक्षत्र देवता**—अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर—दू   **11. वर्ग**—सर्प

12. लग्न स्वामी—गुरु   **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—सूर्य   **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु   **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'राजश्च'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। जिसका स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि व चरण स्वामी सूर्य में परस्पर शत्रुता है। फलतः सूर्य की दशा निकृष्ट फल देगी। आपके लिए शनि की दशा भी प्रतिकूल फल देगी। सूर्य में शनि या शनि में सूर्य की अंतर्दशा मारक दशा का फल देगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। गुरु की दशा स्वास्थ्यप्रद रहेगी। राजयोग देगी क्योंकि गुरु कर्क के पांच अंशों में उच्च का होता है।

मीनलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद   **2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—11/3/20/0 से 11/6/40/0

4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–अहिर्बुध्न्य
10. वर्णाक्षर–दु
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'राजश्च'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ। जिसका स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि व चरण स्वामी सूर्य में परस्पर शत्रुता है। फलत: सूर्य की दशा निकृष्ट फल देगी। आपके लिए शनि की दशा भी प्रतिकूल फल देगी। सूर्य में शनि या शनि में सूर्य की अंतर्दशा मारक दशा का फल देगी।

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। गुरु की दशा स्वास्थ्य प्रद रहेगी। राजयोग देगी।

मीनलग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–11/3/20/0 से 11/6/40/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–अहिर्बुध्न्य
10. वर्णाक्षर–दु
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'राजश्च'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ। जिसका स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि व चरण स्वामी सूर्य में परस्पर शत्रुता है। फलतः सूर्य की दशा निकृष्ट फल देगी। आपके लिए शनि की दशा भी प्रतिकूल फल देगी। सूर्य में शनि या शनि में सूर्य की अंतर्दशा मारक दशा का फल देगी।

यहां लग्न छः से सात अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा पद-प्रतिष्ठा बढ़ायेगी।

मीनलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद
2. नक्षत्र पद—2
3. नक्षत्र अंश—11/6/40/0 से 11/10/0/0
4. वर्ण—विप्र
5. वश्य—जलचर
6. योनि—गौ
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—अहिर्बुध्न्य
10. वर्णाक्षर—थ
11. वर्ग—सर्प
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'तस्करश्चैव'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दूसरे चरण में है। ऐसा जातक तस्करी में रुचि रखता है। उत्तराभाद्रपद के दूसरे चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी शनि बुध का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम, परन्तु बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है एवं बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा पद-प्रतिष्ठा देगी।

मीनलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–11/6/40/0 से 11/10/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–थ
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'तस्करश्चैव'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दूसरे चरण में है। ऐसा जातक तस्करी में रुचि रखता है। उत्तराभाद्रपद के दूसरे चरण का स्वामी बुध है। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि बुध का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम, परन्तु बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा राजयोग देगी क्योंकि दस अंशों में गुरु मूलत्रिकोण का होता है।

मीनलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–11/6/40/0 से 11/10/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–थ
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'तस्करश्चैव'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दूसरे चरण में है। ऐसा जातक तस्करी में रुचि रखता है। उत्तराभाद्रपद के दूसरे चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी शनि बुध का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम, परन्तु बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। गुरु की दशा राजयोग देगी।

मीनलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद

2. **नक्षत्र पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–11/10/0/0 से 11/13/20/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–जलचर

6. **योनि**–गौ

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. **वर्णाक्षर**–झ

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है व पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तमफल देगी।

मीनलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**—उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—11/10/0/0 से 11/13/20/0
4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—जलचर
6. **योनि**—गौ
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**—झ
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है व पूर्णबली है। गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी।

मीनलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**—उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—11/10/0/0 से 11/13/20/0
4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—जलचर
6. **योनि**—गौ
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**—झ
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से **'आरोह अवस्था'** में है एवं पूर्णबली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद 2. **नक्षत्र पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–11/10/0/0 से 11/13/20/0

4. **वर्ण**–विप्र	5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ	7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य	9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–झ	11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–गुरु	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। **'आरोह अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–11/13/20/0 से 11/16/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–ञ्
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान्, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में शत्रुता है। फलतः शनि की दशा नेष्ट एवं मंगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मंगल की दशा से अपेक्षित है। वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–11/13/20/0 से 11/16/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–ञ्
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में शत्रुता है। फलतः शनि की दशा नेष्ट एवं मंगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मंगल की दशा से अपेक्षित है वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** में है तथा पूर्ण बली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–11/13/20/0 से 11/16/40/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गौ **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–ञ् **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में शत्रुता है। फलतः शनि की दशा नेष्ट एवं मंगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मंगल की दशा से अपेक्षित है। वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर **'मध्य अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु व मंगल की दशाओं में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद | **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—11/13/20/0 से 11/16/40/0

4. वर्ण—विप्र | **5. वश्य**—जलचर

6. योनि—गौ | **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य | **9. नक्षत्र देवता**—अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर—ञ् | **11. वर्ग**—सिंह

12. लग्न स्वामी—गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में शत्रुता है। फलतः शनि की दशा नेष्ट एवं मंगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मंगल की दशा से अपेक्षित है। वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर **'मध्य अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु व मंगल की दशाओं में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र—रेवती | **2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—11/16/40/0 से 11/20/0/0

4. वर्ण—विप्र | **5. वश्य**—जलचर

6. योनि—गज | **7. गण**—देव

8. नाड़ी—अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**—पूषा

10. **वर्णाक्षर**—द	11. **वर्ग**—सर्प

12. **लग्न स्वामी**—गुरु	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—'ज्ञानी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी गुरु है। प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति ज्ञानी होता है। लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जबकि बुध की दशा मध्यम रहेगी।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से **'मध्य अवस्था'** में है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक हैं। पद-प्रतिष्ठा दिलायेगी।

मीनलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**—रेवती	2. **नक्षत्र पद**—1

3. **नक्षत्र अंश**—11/16/40/0 से 11/20/0/0

4. **वर्ण**—विप्र	5. **वश्य**—जलचर

6. **योनि**—गज	7. **गण**—देव

8. **नाड़ी**—अन्त्य	9. **नक्षत्र देवता**—पूषा

10. **वर्णाक्षर**—द	11. **वर्ग**—सर्प

12. **लग्न स्वामी**—गुरु	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—'ज्ञानी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी गुरु है। प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति ज्ञानी होता है। लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जबकि बुध की दशा मध्यम रहेगी।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से **'मध्य अवस्था'** में है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है। पद-प्रतिष्ठा दिलायेगी।

मीनलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–11/16/40/0 से 11/20/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–द
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'ज्ञानी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी गुरु है। प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति ज्ञानी होता है। लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जबकि बुध की दशा मध्यम रहेगी।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से **'अवरोह अवस्था'** में है। गुरु की दशा स्वास्थ्यप्रदायक है। पद-प्रतिष्ठा देगी।

मीनलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–11/20/0/0 से 11/23/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–दो
11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'तस्करो'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले व्यक्ति में तस्करी की भावना रहती है। द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि की लग्नेश गुरु से शत्रुता है तथा नक्षत्र स्वामी बुध की भी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा भी मध्यम परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख व भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से **'अवरोह अवस्था'** में है एवं बलवान है। गुरु की दशा स्वस्थ्यवर्धक साबित होगी।

मीनलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–रेवती | **2. नक्षत्र पद**–2
3. नक्षत्र अंश–11/20/0/0 से 11/23/20/0
4. वर्ण–विप्र | **5. वश्य**–जलचर
6. योनि–गज | **7. गण**–देव
8. नाड़ी–अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**–पूषा
10. वर्णाक्षर–दो | **11. वर्ग**–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'तस्करो'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले व्यक्ति में तस्करी की भावना रहती है। द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि की लग्नेश गुरु से शत्रुता है तथा नक्षत्र स्वामी बुध की भी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा भी मध्यम परन्तु बुध की

दशा अत्यन्त शुभफल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख व भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न बाईस से तैईस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है एवं बलवान है। गुरु की दशा स्वस्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–11/20/0/0 से 11/23/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–दो
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'तस्करी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले व्यक्ति में तस्करी की भावना रहती है। द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि की लग्नेश गुरु से शत्रुता है तथा नक्षत्र स्वामी बुध की भी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा भी मध्यम परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख व भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न तैईस से चौबीस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है तथा बलवान है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–11/23/0/0 से 11/26/40/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर

6. योनि—गज
7. गण—देव
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—पूषा
10. वर्णाक्षर—चा
11. वर्ग—सिंह
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'युद्धेजयी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। आपका जन्म रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपको कोर्ट-केस, झगड़े-विवाद में सदैव विजय प्राप्ति होगी। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जो लग्नेश गुरु का शत्रु है। परन्तु लग्ननक्षत्र स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। फलतः गुरु की दशा मध्यम पर शनि की दशा उत्तम फल देगी। बुध की दशा में जातक को समस्त भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य **'अवरोह अवस्था'** में है एवं बलवान है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र—रेवती
2. नक्षत्र पद—3
3. नक्षत्र अंश—11/23/0/0 से 11/26/40/0
4. वर्ण—विप्र
5. वश्य—जलचर
6. योनि—गज
7. गण—देव
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—पूषा
10. वर्णाक्षर—चा
11. वर्ग—सिंह
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'युद्धेजयी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपको कोर्ट-केस, झगड़े-विवाद में सदैव विजय प्राप्त होगी।

रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जो लग्नेश गुरु का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। फलत: गुरु की दशा मध्यम पर शनि की दशा उत्तम फल देगी। बुध की दशा में जातक को समस्त भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य **'हीनबली'** है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–11/26/40/0 से 11/30/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–चा
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'युद्धेजयी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपको कोर्ट-केस, झगड़े-विवाद में सदैव विजय प्राप्ति होगी। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जो लग्नेश गुरु का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। फलत: गुरु की दशा मध्यम पर शनि की दशा उत्तम फल देगी। बुध की दशा में जातक को समस्त भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से **'हीनबली'** है। गुरु की दशा में राजपद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–11/26/40/0 से 11/30/0/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–जलचर

6. **योनि**–गज

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–पूषा

10. **वर्णाक्षर**–ची

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'क्लेशभाग्यवेत्'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। फलतः घर में क्लेश रहेगा। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है एवं लग्नेश भी गुरु होने से गुरु की दशा में अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। नक्षत्र चरण स्वामी गुरु एवं नक्षत्र स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। अतः बुध की दशा यहां मध्यम फल देगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अठ्ठाईस अंशों के भीतर होने से **'हीनबली'** है। गुरु की दशा में राज पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–रेवती

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–11/26/40/0 से 11/30/0/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–जलचर

6. **योनि**–गज

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–पूषा

10. **वर्णाक्षर**–ची

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'क्लेशभाग्यवेत्'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। आपका जन्म रेवती नक्षत्र

के चतुर्थ चरण में है। फलत: घर में क्लेश रहेगा। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है एवं लग्नेश भी गुरु होने से गुरु की दशा में अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। नक्षत्र चरण स्वामी गुरु एवं नक्षत्र स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। अतः बुध की दशा यहां मध्यम फल देगी।

यहां लग्न अठाइस से उन्तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में **'हीनबली'** है। सारा तेज समाप्ति की ओर है। फिर भी गुरु की दशा राज, पद-प्रतिष्ठा देगी।

मीनलग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–रेवती
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–11/26/40/0 से 11/30/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गज
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–पूषा
10. **वर्णाक्षर**–ची
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'क्लेशभाग्यवेत्'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। फलत: घर में क्लेश रहेगा। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है एवं लग्नेश भी गुरु होने से गुरु की दशा में अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। नक्षत्र चरण स्वामी गुरु एवं नक्षत्र स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। अतः बुध की दशा यहां मध्यम फल देगी।

यहा लग्न उन्तीस से तीस अंशों वाला **'अवरोही अवस्था'** में जातक मृतावस्था में है एवं निस्तेज है। गुरु की दशा राज, पद-प्रतिष्ठा देगी।



मीनलग्न और आयुष्य योग

1. मीनलग्न वालों के लिये मंगल भाग्येश होने से मारकेश का कार्य नहीं करेगा। सूर्य परमपापी है। शनि व्ययेश होने से मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र अनिष्ट फलदायक है। बुध सप्तमेश होने से सहायक मारकेश का काम करेगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह गुरु है।
2. मीनलग्न में जन्म लेने वाले की मृत्यु विष से, औषधि सेवन से, अधिक व्रत व उपवास रखने से, अधिक प्रताप करने से, विषैले पदार्थो के सेवन से पशु एवं विष जन्तु से दंश से रात्रिकाल में तथा अपने ही घर में होता है।
3. मीनलग्न में जन्म लेने वाले की आयु 61 वर्ष के आसपास होती हैं तथा जन्मे 1, 3, 12, 15, 27, 39, 42, 45, 49, 52, 55, 60 और 61वें वर्ष शारीरिक कष्ट एवं अल्पमृत्यु की संभावना रहती है।
4. मीनलग्न में गुरु हो, शनि एकादश में, सूर्य द्वितीय भाव में, मान्दी सातवें एवं मंगल नवमें भाव में हो जातक मंत्रबल से दीर्घजीवी एवं यशस्वी होता है।
5. मीनलग्न हो तथा गुरु कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।
6. मीनलग्न में मीन का नवमांश हो, चंद्रमा वृष का हो, नवमांश वगैरा पांच वर्गों में चंद्रमा की स्थिति अच्छी हो, चार-पांच ग्रह, उच्च या स्वगृही हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
7. मीनलग्न में मीन का नवमांश हो तथा चार ग्रह केन्द्र में हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
8. मीनलग्न में चंद्रमा स्व. के नवमांश में लग्नगत हो, चार सौम्य ग्रह केन्द्र में हो, चंद्रमा के साथ अन्य कोई ग्रह हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
9. मीनलग्न में पंचम में चंद्रमा कर्क का, त्रिकोण में गुरु एवं मंगल दशम भाव में हो तो व्यक्ति दीर्घायु होता है।

10. मीनलग्न में दशमेश गुरु पंचम भाव में उच्च का हो, अष्टमेश शुक्र लग्न या केन्द्र में हो तो जातक सौ वर्ष से ऊपर स्वस्थ दीर्घायु को भोगता है।

11. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में बैठा हो तथा लग्न गुरु एवं अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

12. मीनलग्न में चंद्रमा छठे सिंह का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हो तो ऐसा जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

13. मीनलग्न में मंगल पांचवे कर्क का हो, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

14. शनि लग्न में, मिथुन का चन्द्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दशम भाव में अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र सातवे एवं चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

16. मीनलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. मीनलग्न में लग्नेश गुरु पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शुक्र पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

18. मीनलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

19. मीनलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में मापग्रह हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

20. मीनलग्न में शनि मंगल दूसरे स्थान में एवं राहु तीसरे स्थान में बैठा हो तथा शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जाताक एक वर्ष के भीतर मर जाता है।

21. मीनलग्न में शनि सप्तम भाव में हो तथा गुरु+शुक्र+राहु द्वादश भाव में हो तथा अन्य कोई शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त करता है।

22. मीनलग्न के दूसरे घर में (मेष राशि में) राहु+शुक्र+शनि+सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, लग्नेश निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा स्वयं भी कुछ समय बाद गुजर जाता है।

23. मीनलग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

24. मीनलग्न के दूसरे भाव में मेष का मंगल का हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

25. मीनलग्न के द्वादश भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो सातवें शुक्र हो तो जातक बहुत कष्टमय जीवन जीता है। उसे शारीरिक रुग्णता रहती है।

26. मीनलग्न के द्वितीय, एकादश या द्वादश भाव में शनि+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

27. मीनलग्न में अष्टमस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

28. मीनलग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

29. मीनलग्न में लग्नेश गुरु व लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।

30. मीनलग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीडि;त रहता है।

31. मीनलग्न में षष्ठेश सूर्य सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

32. मीनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मीनलग्न और रोग

1. मीनलग्न में षष्टेश सूर्य लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. मीनलग्न में षष्टेश सूर्य पापक्रांत हो तथा शुभग्रह छठे या व्यय स्थान में हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
3. मीनलग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश बुध पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मीनलग्न में चतुर्थेश बुध कर्क राशि में, निर्बल या अस्तगत हो अथवा आठवें हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. मीनलग्न के चतुर्थ शनि में शनि हो षष्टेश शुक्र एवं सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. मीनलग्न में चतुर्थेश बुध यदि अष्टमेश शुक्र के साथ अष्टमा में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. जातक पारिजात के अनुसार मीनलग्न के चौथे एवं पांचवें भावों में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. मीनलग्न के चतुर्थ स्थान में मिथुन का शनि एवं कुंभ का सूर्य द्वादश में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
9. मीनलग्न के चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो, लग्नेश, गुरु निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय (हार्ट-अटैक) होता है।
10. मीनलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
11. मीनलग्न में गुरु+बुध+शुक्र की युति एक साथ, दुःस्थानों में हो तो जातक को वाहन दुर्घटना में मृत्यु होती है।
12. मीनलग्न में पापग्रह हो, लग्नेश गुरु बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

13. मीनलग्न में क्षीण चंद्रमा लग्नस्थ हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोग्रस्त रहता है।

14. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में हो, लग्नेश गुरु अष्टम में हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

15. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में बैठा हो तथा लग्न गुरु एवं अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

16. मीनलग्न में चंद्रमा छठे सिंह का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केंद्रवर्ती हो तो ऐसा जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त [redacted]

17. मीनलग्न में मंगल पांचवें कर्क का हो, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

18. शनि लग्न में, मिथुन का चंद्रमा, चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दशम भाव में अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. मीनलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धांतिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. मीनलग्न में लग्नेश गुरु पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शुक्र पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

22. मीनलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

23. मीनलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

24. मीनलग्न में शनि मंगल दूसरे स्थान में एवं राहु तीसरे स्थान में बैठा हो तथा शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक एक वर्ष के भीतर मर जाता है।

25. मीनलग्न में शनि सप्तम भाव में हो तथा गुरु+शुक्र+राहु द्वादश भाव में हो तथा अन्य कोई शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त करता है।

26. मीनलग्न के दूसरे घर में (मेष राशि) में राहु+शुक्र+शनि+सूर्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो, लग्नेश निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा स्वयं भी कुछ समय बाद गुजर जाता है।

27. मीनलग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. मीनलग्न के दूसरे भाव में मेष का मंगल का हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

29. मीनलग्न के द्वादश भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो सातवें शुक्र हो तो जातक बहुत कष्टमय जीवन जीता है। उसे शारीरिक रुग्णता रहती है।

30. मीनलग्न के द्वितीय, एकादश या द्वादश भाव में शनि+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

31. मीनलग्न में अष्टमस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

32. मीनलग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

33. मीनलग्न में लग्नेश गुरु व लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।

34. मीनलग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

35. मीनलग्न में षष्ठेश सूर्य सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

36. मीनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मीनलग्न और धन योग

मीनलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिये धनप्रदाता ग्रह मंगल है। धनेश मंगल की शुभाशुभ स्थित, धनस्थान से संबंध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग, गुरु तथा धनभाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश चंद्रमा, लग्नेश गुरु, तथा लाभेश शनि की अनुकूल-प्रतिकूल व परिस्थितियां भी मीनलग्न में जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने-बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वैसे मीनलग्न के लिये शनि, शुक्र, सूर्य व बुध अशुभ होते हैं। मंगल और चंद्रमा शुभ फलदायक होते हैं। मंगल मारकेश होते हुए भी मारक का काम नहीं करेगा। शनि व्ययेश होने से सहायक मारकेश का काम करेगा। सूर्य, शुक्र व शनि परमपापी ग्रह है। अकेला गुरु राजयोगकारक है। बुध सप्तमेश होने में मारक ग्रह है।

सफल व शुभ योग—1. मंगल + गुरु, 2. गुरु + चंद्रमा

राजयोगकारक—चंद्र, गुरु

निष्फल योग—मंगल + बुध

अशुभ योग— 1. गुरु + शुक्र, 2. गुरु + सूर्य, 3. गुरु + बुध

लक्ष्मी योग—मंगल नवम में, गुरु केन्द्र-त्रिकोण में, शनि एकादश में।

विशेष योगा योग

1. मीनलग्न में लग्नस्थान गुरु बुध एवं मंगल से युत हो अथवा लग्न स्थित बुध गुरु मंगल से दृष्ट हो तो जातक महाधनशाली होता है।
2. मीनलग्न में मंगल मेष, वृश्चिक या मकर राशि का होता ऐसा जातक अल्प प्रयास से भारी धन कमाता है। ऐसा जातक को धन के मामले को लेकर

भाग्यशाली कहा जा सकता है। लक्ष्मी ऐसा जातक का पीछा नहीं छोड़ती है।

3. मीनलग्न हो, गुरु लग्न में हो, तथा बुध एवं शनि अपनी-अपनी स्वराशि में हो तो ऐसा व्यक्ति धनवानों में अग्रगण्य होता है तथा पद-पद पर लक्ष्मी उसके साथ चलती है।

4. मीनलग्न में मंगल यदि शनि के घर में एवं शनि मंगल के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठा हो अर्थात् मकर या कुम्भ राशि में हो तथा शनि मेष या वृश्चिक राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। जीवन में खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी दासी के समान सेवा करती है।

5. मीनलग्न में गुरु यदि केन्द्र-त्रिकोण में कहीं भी हो तथा मंगल स्वगृही हो तो ऐसा जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति, कोट्याधिपति हो जाता है। ऐसा जातक का भाग्योदय प्रायः 28 वर्ष की आयु के बाद होता है।

6. मीनलग्न हो, पंचम में चंद्रमा स्वगृही हो तथा शनि मकर राशि का लाभ स्थान में हो तो जातक लक्षाधिपति होता है।

7. मीनलग्न में कर्क का बुध पांचवें तथा मकर का शनि लाभ में हो तो जातक धनी होता है।

8. मीनलग्न में चंद्रमा पांचवें, गुरु स्वगृही धनु या मीन का वही भी बैठा हो तो जातक महाधनी होता है।

9. मीनलग्न में गुरु+चंद्रमा+मंगल की युति हो तो 'महालक्ष्मी योग' बनता है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी, अतिधनवान, ऐश्वर्यमान एवं महाप्रतापी होता है।

10. मीनलग्न में गुरु+बुध एवं मंगल से युत हो तो 'महालक्ष्मीयोग' बनता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ, महाधनी एवं अतिप्रतापी होता है।

11. मीनलग्न में गुरु मकर राशि में हो तथा शनि मीन राशि में हो तो जातक 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वार्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसा व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

12. मीनलग्न हो, लग्नेश गुरु, धनेश व भाग्येश मंगल तथा लाभेश शनि यदि अपनी-अपनी उच्च व स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।

13. मीनलग्न के सप्तम भाव में राहु, शुक्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

14. मीनलग्न में धनेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो 'धनहीन योग' की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर सकता। ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता है। सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभियंत्रित 'मंगल यंत्र' धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो 'मंगल यंत्र' हमारे कार्यालय से प्राप्ति कर सकते हैं।

15. मीनलग्न में धनेश मंगल यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुये धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

16. मीनलग्न में मंगल यदि नवम भाव में वृश्चिक राशि का हो तो रुचक योग बनता है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ, अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

17. मीनलग्न में सुखेश बुध, लाभेश शनि यदि नवम भाव में मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

18. मीनलग्न में चंद्रमा+गुरु की युति यदि मेष राशि, मिथुन राशि, कर्क राशि या वृश्चिक राशि में हो तो इस प्रकार से गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अचानक उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर मार्केट या अन्य व्यापारिक स्रोत के द्वारा अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

19. मीनलग्न में धनेश मंगल अष्टम में एवं अष्टमेश शुक्र धनस्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मंगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

20. मीनलग्न हो, तृतीयेश शुक्र, लाभ में एवं लाभेश शनि तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. मीनलग्न में बलवान मंगल के साथ यदि चतुर्थेश बुध की युति हो तो व्यक्ति के माता के द्वारा, भूमि के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

22. लग्नेश गुरु धन भवन में हो, मंगल का लग्नेश से संबंध हो तो जातक उच्च कोटि का व्यापारी होता है।

23. मीनलग्न हो तथा शुक्र द्वादश स्थान में हो तो वह शुभ नहीं रहता, ऐसा जातक निश्चय ही ऋणग्रस्त रहता है।

24. यदि द्वादश स्थान में कुंभ राशिस्थ चंद्रमा हो तो जातक निश्चय ही लखपति के घर जन्म लेकर भी साधारण जीवन व्यतीत करता है।

25. मंगल यदि उच्च का एकादश स्थान में हो जातक निश्चय ही करोड़पति होता है। चाहे जातक का कोई भी सहायक न हो। ऐसा मंगल आकस्मिक धन दिलाने में भी सहायक होता है।

26. कर्क राशि में पंचम भाव में मंगल हो तो जातक का धन स्त्री एवं स्त्री के भाई द्वारा नष्ट होता है।

27. यदि दूसरे भाव में चंद्रमा एवं पांचवें भाव में मंगल हो तो मंगल की दशा में श्रेष्ठ धन लाभ होता है।

28. गुरु छठे भावे में हो, शुक्र आठवें, शनि बारहवें तथा चंद्रमा-मंगल ग्यारहवें भावस्थ हो तो उच्चातिउच्च धनदायक योग बनता है।

29. चंद्रमा व मंगल का योग हो, लाभेश व धनेश चतुर्थ भावस्थ हो तथा चतुर्थेश शुभ स्थान में शुभ युत एवं दृष्ट हो तो जातक को अचानक धन की प्राप्ति होती है।

30. द्वितीयेश, पंचमेश अथवा द्वितीयेश एकादशेश परस्पर स्थानान्तरित होते हों या नवमेश व पंचमेश नवम, पंचम भाव में ही हो तो उत्तम धन योग होता है।

31. द्वितीयेश, एकादशेश, पंचमेश, नवमेश से संबंध करे तो उत्तम अर्थ योग होता है।

32. द्वितीयेश-एकादशेश साथ-साथ हों और मीनलग्न हो तो धन का नाश होता है।

33. लग्नेश गुरु, चतुर्थेश बुध, नवमेश मंगल मिलकर यदि अष्टम भाव में हो तो जातक दरिद्र होता है।

34. द्वादशेश व द्वितीयेश स्थान परिवर्तन किए हुए हों तो भी धन का नाश होता है।

35. यदि बुध, गुरु, शुक्र एवं शुक्ल पक्ष में चंद्रमा का पाप ग्रह देखते हों तो जातक भाग्यशाली तो नहीं परन्तु धनवान अवश्य होता है।

36. मीनलग्न में व्ययेश शनि यदि व्यय भाव में ही हो तो ऐसा व्यक्ति का धन पाप कर्मों में या फिजूल खर्चों में समाप्त हो जाता है।

37. मीनलग्न में सूर्य और चंद्रमा दोनों ही कुम्भ राशि में हो तथा तीन-चार ग्रह नीच के हो तो व्यक्ति करोड़पति के घर में जन्म लेकर भी दरिद्र होता है।

38. मीनलग्न में यदि बलवान मंगल की पंचमेश चंद्रमा से युति हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

39. मीनलग्न में बलवान मंगल यदि षष्टेश सूर्य के साथ युति हो, धनभाव पर शनि की दृष्टि हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

40. मीनलग्न में बलवान मंगल की सप्तमेश बुध से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष में धन की प्राप्ति होती है।

41. मीनलग्न में बलवान मंगल यदि नवम भाव में, लग्नेश गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति राजा, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों, सरकारी अनुबंधन (ठेकों) से काफी धन कमाता है।

42. मीनलग्न में बलवान मंगल की दशमेश गुरु से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

43. मीनलग्न में दशम भाव का स्वामी गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति जन्म स्थान में नहीं कमाता, उसे सदा धन की कमी बनी रहती है।

44. मीनलग्न में लग्नेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य तुला का आठवें हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती है।

45. मीनलग्न में धनभाव में पापग्रह हो तथा लाभेश शनि यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

46. मीनलग्न के केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा गुरु से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

47. मीनलग्न में धनेश मंगल अस्त हो, नीच राशि (कर्क) में हो तथा धनस्थान एवं अष्टम भाव में कोई भी पापग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।

48. मीनलग्न में लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत, पापपीड़ित हो जातक महादरिद्र होता है।

49. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र वक्री होकर कहीं बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात धन हानि का योग बनता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, फलतः सावधान रहे।

50. मीनलग्न में अष्टमेश, शुक्र शत्रुक्षेत्री, नीचराशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

मीनलग्न और विवाह योग

1. मीनजातक की कुण्डली में अष्टमेश की दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो जातक स्त्री दुराचारिणी होती है।
2. मीनलग्न हो तथा जातक स्त्री का बुध उच्च का हो तो वह नारी-कवि हृदय, सौभाग्यशालिनी और सुन्दर गुणों से मंडित होती है। ऐसी नारी जीवन के समस्त ऐश्वर्य भोगती है।
3. सप्तम स्थान में सूर्य या उसका नवमांश हो तो उस स्त्री का पति लेखक, विचारक अथवा अफसर होता है, परन्तु रतिचर्या में स्त्री पति से प्रसन्न नहीं रहती।
4. लग्न में सूर्य, शनि तथा सप्तम भाव में बुध हो तो जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण रहता है।
5. मंगल यदि छठे भावस्थ हो, सप्तम भाव में राहु, अष्टम भाव में शनि हो तो जातक की स्त्री जीवित नहीं रहती।
6. लग्न में मीन का सूर्य हो, द्वितीय स्थान में मेष का सूर्य, सप्तम में कन्या में पाप ग्रह के साथ चंद्रमा हो तो स्त्री हेतुक मरण घर में हो।
7. सप्तमेश पापग्रह से युति करे या दूसरे अथवा सप्तम भाव में मंगल, राहु, सूर्य, शनि में से कोई हो या शुक्र लाभ स्थान में या नीच की राशि में हो अथवा सूर्य अपने ही घर में या द्वादश स्थान में हो तो जातक दूसरा विवाह अवश्य करता है।
8. शनि द्वितीय स्थान में हो और राहु सप्तम भवन में हो तो जातक दो विवाह करता है।
9. यदि द्वितीयेश व सप्तमेश या शुक्र सातवें घर में हो और दूसरे व सातवें घरों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जितने ही शुभ ग्रहों की दृष्टि हो उतनी ही

पत्नियां हों या उतनी ही स्त्रियों से सुख हो पर यदि क्रूर ग्रह से युक्त ये स्थान या शुक्र हो तो यह भोग नहीं होता।

10. नवमेश, सप्तमेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो जातक का, भाग्योदय अपनी-अपनी पत्नी के कारण होता है।

11. मीनलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भंयकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।

12. मीनलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

13. मीनलग्न में शनि छठे, सूर्य आठवें हो एवं सप्तमेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

14. मीनलग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की युति कहीं भी हो, सप्तमेश बुध हीनबली हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

15. मीनलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि का हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

16. मीनलग्न द्वितीयेश मंगल वक्री हो अथवा द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

17. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हो तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

18. मीनलग्न में सप्तमेश बुध अस्त हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

19. मीनलग्न में द्वितीयेश मंगल, परस्पर शनि से दृष्ट हो तो विवाह विलम्ब से होता है ससुराल से खटपट रहती है।

20. मीनलग्न में सातवें सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है अर्थात् उसे तलाक मिलता है।

21. मीनलग्न में सप्तमेश बुध आठवें स्थान में पापग्रहों से युत हो या पापग्रहों के मध्य हो तो ऐसा जातक अपने जीवनसाथी की हत्या करता है एवं कुल को कलंकित करता है।

22. मीनलग्न में सूर्य आठवें शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नितनूतन वस्त्र-अलंकार पहनकर पर पुरुषों का संग करती है एवं कुल की मार्यादा को नष्ट कर देती है।

23. मीनलग्न में मंगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री प्रायः प्रेमविवाह करती हुई, स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।

24. मीनलग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कोमल एवं मृदु स्वभाव वाली जातक होती है।

25. मीनलग्न में, गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी, सच्चरित्र वाली एवं सभ्य महिला होती है।

26. जातक पारिजात के अनुसार मीनलग्न में उत्पन्न कन्याएं कामक्रीडा व अन्य कलाओं में निपुण होता है। यदि चंद्रमा लग्न में हो तो ऐसी स्त्री पति की प्रिया एवं प्राणवल्लभा होती है।

27. मीनलग्न में लग्नस्थ गुरु के साथ अष्टमेश शुक्र हो तो 'द्विभार्या योग' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

28. मीनलग्न में बुध सप्तम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक एवं साथ में दो स्त्रियों से प्रेम रखता है अर्थात् विवाहित पत्नी के अतिरिक्त उसके उपपत्नी भी होती है।

29. मीनलग्न में सप्तमेश बुध यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण 'व्यभिचारी योग' बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

❑❑❑

मीनलग्न और संतान योग

1. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा यदि आठवें हो तो जातक को अल्प संतति होती है।
2. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा क्षीण हो, पापग्रस्त या पापपीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
3. मीनलग्न में गुरु कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक के पहली संतान कन्या होती है।
4. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा विषम राशि में हो तो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम संतान पुत्र ही होगा।
5. मीनलग्न में सूर्य अकेला कर्क राशि में हो जातक दूसरा विवाह करने पर पुत्र की प्राप्ति होती है।
6. मीनलग्न में मंगल अकेला कर्क राशिगत पंचमस्थ हो तो जातक को दूसरे विवाह से पुत्र की प्राप्ति होती है।
7. मीनलग्न में शुक्र अकेला कर्क राशिगत पंचमस्थ हो तो व्यक्ति को दूसरे विवाह के बाद पुत्र की प्राप्ति होती है।
8. मीनलग्न में बुध अकेला कर्क राशिगत हो तो जातक के थोड़े पुत्र होते हैं।
9. मीनलग्न में शनि अकेला कर्क राशिगत हो तो जातक के बहुत पुत्र होते हैं।
10. मीनलग्न में चंद्रमा स्वराशिगत पंचमस्थ हो तो थोड़े पुत्र होते हैं।
11. मीनलग्न में अकेला गुरु पंचमस्थ कर्क राशि में हो तो जातक के बहुत-सी कन्याएं होती है।
12. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा लग्न में हो एवं लग्नेश गुरु पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
13. मीनलग्न के पंचम भाव में कर्क राशि होने से, यदि अन्य कोई दुर्योग न हो तो विवाहोपरान्त जातक के शीघ्र संतति होती है।

14. मीनलग्न में गुरु कमजोर हो, साथ में पंचमेश चंद्रमा, सप्तमेश बुध ही बलहीन हो तो 'अनपत्य योग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह, पुत्र-संतान की प्राप्ति नहीं होती पर उपाय करने से दोष की निवृत्ति हो जाती है।

15. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को 'सिजेरियन चाइल्ड' कहते हैं।

16. मीनलग्न हो पंचमेश चंद्रमा कमजोर हो तथा राहु एकादश भाव में हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है।

17. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पापग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

18. मीनलग्न में लग्नेश गुरु द्वितीय स्थान में हो एवं पंचमेश व चंद्रमा पापग्रह या पापपीड़ित हो तो ऐसे जातक के पुत्र संतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं।

19. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा बारहवें, शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे जातक के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख हो जाता है।

20. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्यारत्न की प्राप्ति होती है।

21. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा की सप्तमेश बुध के साथ युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्यारत्न की प्राप्ति होती है।

22. सप्तम भाव में अर्थात् कन्या राशिस्थ मंगल हो तो एवं उस पर शनि की दृष्टि हो अर्थात् लग्न में मीन का शनि हो तो जातक स्त्री के संतान नहीं होती।

23. लग्नेश-पंचमेश की युति कहीं भी हो तो जातक का संतान पक्ष प्रबल होता है।

24. गुरु चंद्रमा क्रमशः अपनी उच्च राशि कर्क वृष में पुनः क्रमशः पंचम व तृतीय भाव में हो तो जातक की संतान अत्यधिक भाग्यशाली होती है।

25. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

26. पंचमेश चंद्रमा निर्बल हो, लग्नेश गुरु की निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्वदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

27. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्मनामक 'कालसर्प योग' के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

28. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

29. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम से सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो 'वंशविच्छेद योग' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलती।

30. मीनलग्न के चतुर्थभाव में पापग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उसके आठवें स्थान में पापग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

31. तीन केन्द्रों में पापग्रह हो तो व्यक्ति को 'इलाख्या नामक' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती।

32. मीनलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'अनपत्य योग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

33. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है, पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

34. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्यलग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो 'अनगर्भा योग' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती है।

35. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो 'अनगर्भा योग' बनता है। ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

36. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो 'कुलवर्द्धन योग' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

37. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को केवल 'कन्या योग' होता है। पुत्र संतान नहीं होता।

38. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा धनस्थान में मेषराशि का हो, मंगल वृष में तथा तुला का गुरु चंद्रमा को देख रहा हो तो ऐसे जातक को कोई कन्या न होकर दो पुत्र ही होते हैं।

उदाहरण–लक्ष्मीचन्द्र राठी, 29.9.1958 समय 18.40 नोखा (राज.)

❑❑❑

मीनलग्न और राजयोग

1. यदि मीनलग्न अपने पूर्णांश पर हो, उसमें उच्च का शुक्र हो, उच्च का सूर्य धन स्थान मे हो, उच्च का बुध सप्तम में हो और उच्च का मंगल लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. बुध को छोड़कर उपर्युक्त तीनों ग्रह उच्च के हों तो राजयोग होता है। मीन का चंद्रमा लग्न में, सिंह का स्वगृही सूर्य शत्रु भाव में, कुम्भ का स्वगृही शनि द्वादश में तथा मकर में उच्च का मंगल लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का सूर्य स्वगृही मंगल के साथ धन स्थान में, उच्च का चंद्रमा स्वगृही शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में, स्वगृही बुध चतुर्थ में और स्वगृही वृश्चिक का मंगल भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. कर्क का चंद्रमा पंचम स्थान में, उच्च का बुध सप्तम स्थान में, धन का स्वगृही गुरु राज्य स्थान में और मकर का मंगल स्वगृही शनि के साथ एकादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. चार, पांच, छः, तीन उच्च के ग्रह यदि अपने उच्चांश या मित्रांश पर केन्द्र त्रिकोण में बलवान् हो या चार, पांच, छः स्वगृही ग्रह पूर्णबली होकर केन्द्र त्रिकोण में मित्रराशि के होकर बैठे हों तो राजयोग करते हैं। तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. शुक्र, बुध मीन के लग्न में हो, गुरु, चंद्रमा धन के दशम में हों, उच्च का मंगल एकादश लाभ में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. मीन का चंद्रमा लग्न में हो, मिथुन का शनि चतुर्थ स्थान में हो, बुध, शुक्र, सूर्य कन्या के सप्तम में हो, वृश्चिक का गुरु नवम भाव में और धन का मंगल

राज्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

8. मीन का शुक्र लग्न में और कर्क का गुरु पंचम में हो तो भी राजयोग होता है तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

9. मीनलग्न में पूर्ण चंद्रमा, मित्र, शुभ समस्त ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य को बड़ा आदमी बनाता है।

10. यदि मीन का गुरु स्वगृही लग्न में हो तो स्वगृही चंद्रमा कर्क का लग्न में हो तो ऐसे योग वाला व्यक्ति बड़ा धनी होता है।

11. यदि मीनलग्न का स्वामी गुरु स्वगृही होकर दशम स्थान में हो, चंद्रमा उच्च का पराक्रम या तीसरे भाव में बैठा हो और सप्तमेश बुध स्वगृही मिथुन का चतुर्थ स्थान में हो और लग्न में उच्च का शुक्र निष्पाप बैठा हो तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, बड़ा सरकारी कर्मचारी, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

12. यदि मीनलग्न में चंद्रमा हो, सिंह का सूर्य छठे स्थान में हो, मकर का मंगल एकादश स्थान में हो और कुम्भ का शनि द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होता है।

13. यदि मीनलग्न में शुक्र, धन स्थान में सूर्य या मंगल, पंचम स्थान में गुरु या चंद्रमा हो तो मनुष्य बड़ा राज्य कर्मचारी होता है।

14. दशमेश लग्न में हो, लग्नेश दशम में या उस पर शुभ दृष्टि हो तो जातक ज्ञानी व उच्च पदस्थ होता है।

15. मीनलग्न हो, लाभेश व भाग्येश शनि मंगल एकादश स्थान में चंद्रमा के साथ हो और गुरु लग्नेश होकर कर्क में बैठ कर उन्हें पूर्ण दृष्टि से देखे तो सुन्दर राजयोग होता है।

16. मीनलग्न हो, लग्न में उच्च का शुक्र हो, गुरु व चंद्रमा धनुराशि में हो तथा मकर में उच्च का मंगल हो तो उत्तम राजयोग होता है।

17. मीनलग्न में चंद्रमा हो, कुंभ में शनि तथा मकर व सिंह में क्रमशः मंगल सूर्य हो तो उत्तम राजयोग होता है।

18. मीनलग्न जन्म काल में तुला, धनु, मीन व लग्न में शनि बैठा हो तो राजकुल में जन्म और राजा होता है।

19. मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण, सुन्दर स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश नगर, देखने में व्यस्त राजा होता है।

20. मीन में शुक्र, बारहवें भाव में बुध, धन भाव में राहु, लग्न में रवि, तीसरे भाव में मंगल हो तो राजयोग होता है।

21. मीनलग्न में गुरु शुक्र, मेष में सूर्य, मकर में मंगल हो तो दास कुल में उत्पन्न होने पर भी छत्रधारी राजा होता है।

22. गुरु शुक्र और चंद्रमा ये तीनों मीनराशि के हों तो इस योग में जन्म लेने वाले को राज्यप्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनके पुत्र वाली होती है।

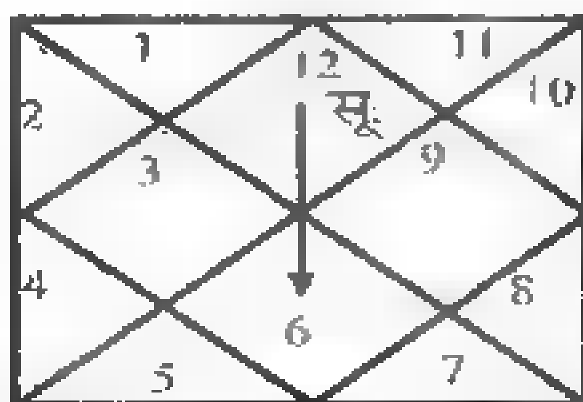
23. मीनलग्न में मीन का चंद्रमा, मकर का मंगल, सिंह का सूर्य, कुंभ का शनि हो तो राजयोग होता है।

24. मीनलग्न में धन का गुरु चंद्रमा से युक्त, मकर का मंगल और लग्न में उच्च का शुक्र अथवा बुध हो, तो राजयोग होता है।

❑❑❑

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां प्रथम स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। छठे भाव का स्वामी, छठे भाव से आठवें होकर लग्न में बैठा है। फलतः जातक को पिता का सुख उत्तम, जातक का पिता समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे पर सूर्य के लग्न में होने से शत्रुओं पर विजय मिलेगी। जातक परिश्रमी होगा तथा सुगठित देह का स्वामी होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होगी। वैवाहिक जीवन सुखी। जातक के उग्र स्वभाव के कारण पति-पत्नी में टकराहट होगी।

निशानी–जातक को सिरदर्द की बीमारी होगी, हाई ब्लड प्रेशर, मस्तिष्क की गर्मी रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मध्यम फलकारी होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय में 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति लग्न में जातक को आकर्षक व्यक्तित्व का धनी बनायेगा। जातक महान् शिक्षाविद् होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। धनी होगा।

3. **सूर्य+बुध**—भोजसंहिता के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। प्रथम स्थान में मीनराशिगत यह युति वस्तु षटेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। जातक धनवान होगा। ज्योतिष-तंत्र-मंत्र एवं आध्यात्म विद्याओं का जानकार होगा। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। दीर्घजीवी भी होगा।

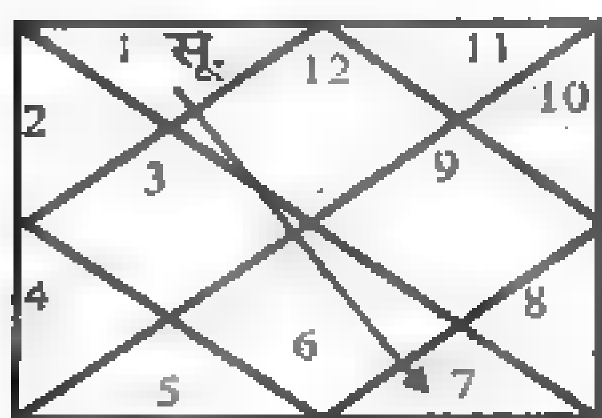
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ उच्च का शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान धनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य अपनी मित्र राशि में हो तो शनि अपनी शत्रुराशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति विस्फोटक है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक की वाणी स्खलित होती रहेगी। चरित्र विरोधाभासी होगा।

7. **सूर्य+राहु**—राहु सूर्य के साथ होने से जातक गर्म मिजाज का होगा। उसके निर्णय व सोच गलत होगी।

8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु होने से जातक उग्र-स्वभाव का होगा। अति उत्साही होगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां द्वितीय स्थान में उच्च का होगा। मेषराशि के दस अंशों तक सूर्य परमोच्च का होगा। जातक का पिता, जातक से अधिक धनवान होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को धन यश की प्राप्ति होगी। जातक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी होगा। शत्रुओं पर विजय निश्चित रूप से होगी।

दृष्टि—द्वितीयभाव गत सूर्य की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को ननिहाल का सुख श्रेष्ठ, नौकर-चाकर का सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

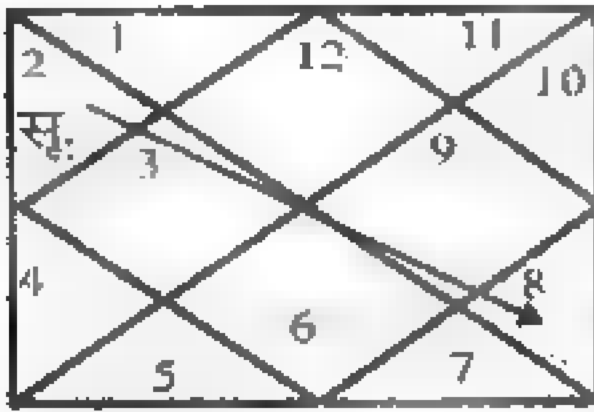
निशानी–जातक के शत्रु नहीं होंगे। जातक की भाषा आदेशात्मक होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में श्रेष्ठ फल मिलेगा। जातक को धन मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति द्वितीय स्थान में (मेषराशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय से पूर्व प्रात: 4 से 6 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति जातक को महाधनी बनायेगी क्योंकि यहां सूर्य उच्च का योगकारक चन्द्रमा के साथ होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ योगकारक मंगल स्वगृही होने से जातक महाधनी होगा। 'किम्बहुना योग' के कारण जातक बड़ी भूमि का स्वामी या ग्राम का मुखिया होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीन में सूर्य षष्टेश होगा। द्वितीय स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। जातक प्रख्यात धनवान होगा। आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के रहेंगे। जीवन सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं व ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक को परिश्रम का मीठा फल मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में होगा। सूर्य अपनी उच्च राशि में तो शनि अपनी नीच राशि में होकर 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा। पर सही व सच्चा भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से धन के घड़े में छेद होगा। रुपया एकत्रित नहीं हो पायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां तृतीय स्थान में वृष (शत्रु) राशि में होगे। जातक का शौर्य, पराक्रम, साहस, विलक्षण होगा। जातक के भाई-बहन होंगे पर उनसे मनमुटाव रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर पिता से विचार नहीं मिलेंगे। जातक को मित्रों से लाभ होगा। मित्रों द्वारा भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि नवम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी फलतः जातक भाग्यशाली होगा। उसे धन, यश, पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसा जातक भाई का शत्रु होता है। उसके नौकर क्रूर स्वभाव वाले होते हैं।

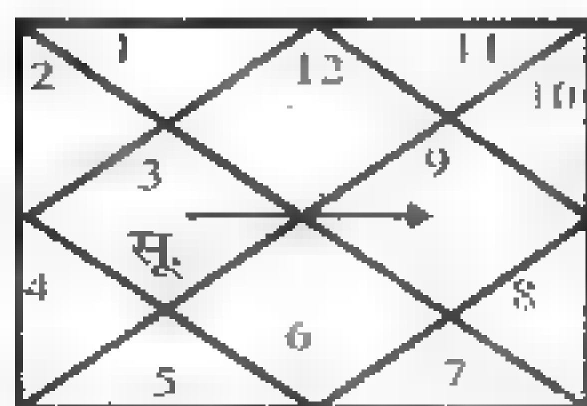
दशा–सूर्य की दशा–अंतर्दशा श्रेष्ठ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति तृतीय स्थान में (वृषराशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। षष्टेश+पंचमेश की युति में यहां चंद्रमा उच्च का होगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्ब का सुख मिलेगा। जातक को स्त्री-मित्रों से विशेष लाभ होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। मित्रों और भाइयों से लाभ होगा पर छोटे भाई का सुख कमजोर है।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। तृतीय स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों यह भाग्यभवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनी एवं महान् पराक्रमी व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसे मित्रों परिजनों की मदद भी मिलती रहेगी। भाग्योदय 26 वर्ष में होने के संकेत मिलता है। दूसरा भाग्योदय 32 वर्ष में होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु जातक को मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र भाइयों में परस्पर मुकदमेबाजी होगी।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। सूर्य अपनी शत्रु राशि में हो तो शनि मित्रराशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की यह युति पराक्रम को भंग करेगी। जातक को छोटे व बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं होगा। मित्र अच्छे व सच्चे न होकर दगाबाज होंगे।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु भाइयों कुटम्बियों से झगड़ा करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु भाइयों व मित्रों में विद्वेष फैलायेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां चतुर्थ स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा। सूर्य यहां छठे भाव में ग्यारहवें स्थान पर होने से ननिहाल, मामा का सुख, नौकरी का लाभ होता है। जातक की माता बीमार रहती है। 50 वर्ष की आयु में जातक का साथ छोड़ देती है। वाहन होगा पर दुर्घटना का भय रहेगा।

दृष्टि—चतुर्थभावगत सूर्य की दृष्टि दशम स्थान (धनुराशि) पर होगी। जातक को सरकारी नौकरी से लाभ होगा। पर नौकरी एक बार छूटेगी। राज्य से सम्मान मिलेगा।

निशानी—ऐसा जातक अपना घर छोड़कर दूर स्थान में आजीविका कमाने हेतु जायेगा।

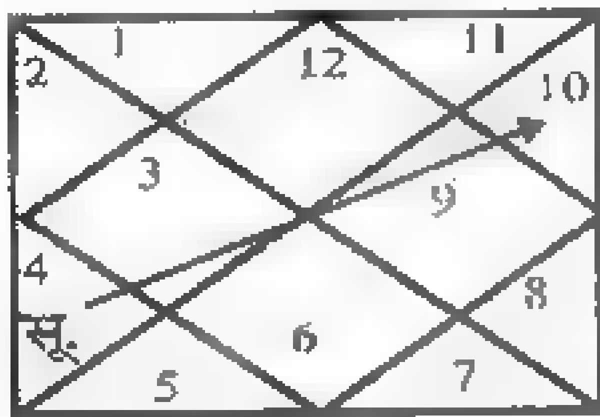
दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा लाभ देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति केंद्र से, हृदय रोग की संभावना को बढ़ायेगी। जातक की माता बीमार रहेगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को माता का सुख देगा। भौतिक सुख देगी। वाहन का सुख होगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। चतुर्थ स्थान में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां स्वगृही होगा। बुध के कारण 'भंग योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक माता-पिता, कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा। वाहनसुख एवं मकान भाव परिपूर्ण होगा। जातक जाति समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य+गुरु की युति में जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगी। जातक सफल व्यक्ति होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति से जातक की माता की मृत्यु अल्पायु में होगी अथवा दीर्घकालीक बीमारी से ग्रसित होगी। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा। माता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी।
7. **सूर्य+राहु**–माता की मृत्यु अल्प आयु में संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–माता का स्वास्थ्य चिंता का विषय रहेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां पंचम स्थान में कर्क (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक विद्यावान होगा एवं उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा। जातक को संतान संबंधी कष्ट होगा। पितृ स्थान में नवमें स्थान पर सूर्य होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक पिता माता का भक्त होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक को बुद्धि:बल में अचानक धन की प्राप्ति होगी।

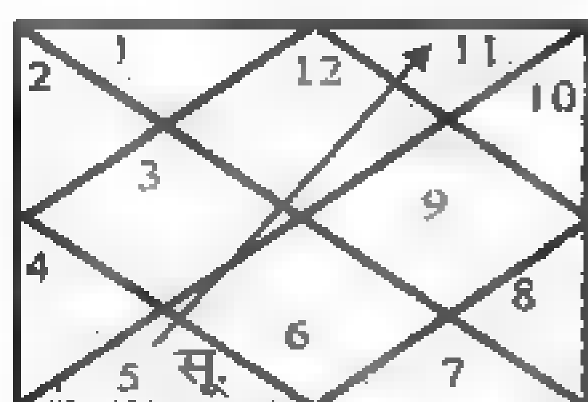
निशानी–ऐसे जातक के पास धन स्थिर नहीं रहता। जातक को अपने ही संतान के साथ वैर-भाव रहता है। ऐसे जातक स्वार्थी व अदूरदर्शी होते हैं तथा मानसिक तनाव में रहते हैं।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति पंचम स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 12 से 10 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां जातक को सुन्दर संतति व उत्तम शिक्षा देगी।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक के तीन पुत्र होंगे। पुत्र अधिक होंगे। एक कन्या संभव।
3. **सूर्य+बुध**–भोजसंहिता के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। पंचम स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह, लाभस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा, धनवान होगा, शिक्षित होगा तथा जातक की संतति भी शिक्षित होगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा। जातक अपनी जाति व समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु यहां उच्च का होगा। ऐसा जातक तंत्र-मंत्र विद्या का जानकार होगा। आध्यात्मिक शक्ति का स्वामी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य, शुक्र की युति से प्रथम संतति हाथ नहीं लगेगी।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति से एकाध संतान की मृत्यु विद्या में बाधा एवं संतान को लेकर परेशानी बनी रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–संतति योग में बाधक है। दुर्भाग्य मरी हुई संतान हाथ पैदा होगी।
8. **सूर्य+केतु**–एक-दो संतति का गर्भस्राव होगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां छठे स्थान में सिंह राशि में स्वगृही होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। ऐसा जातक साहसी, परिश्रमी, उत्साही, शत्रुहन्ता व अनुशासन प्रिय होता है। पर जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

दृष्टि–छठे भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय स्थान (कुंभराशि) पर होगी। ऐसे जातक को खर्च के कारण परेशानी होगी। खर्च की अधिकता के कारण जातक ऋणग्रस्त हो सकता है।

निशानी–जहां सभ्यता, विनम्रता इत्यादि अन्य प्रयास असफल हो जाते हैं वहां ऐसे जातक डाटी-डपट, झगड़े-टंटे से अपना काम निकालने में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

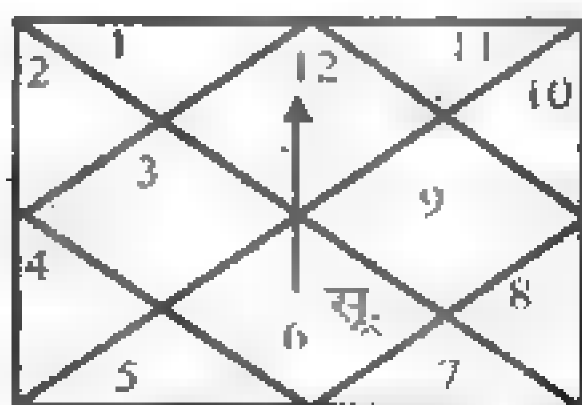
1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति छठे स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' दोनों बनेंगे। फलतः जातक का जीवन संघर्षमय होगा। जातक डरपोक मनोवृत्ति वाला होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। छठे स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा। यह बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। षष्टेश षष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'हर्ष योग' बनेगा। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। बुध छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनता है। जातक को माता या बहन का सुख कम मिलेगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं सहज में प्राप्त होंगी। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा पर सरल नामक 'विपरीतराज योग' भी बनायेगा। जातक धनी होगा पर किसी स्त्री की मित्रता के कारण बदनाम होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगी। सूर्य के कारण 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा। षष्टेश एवं व्ययेश

की युति शत्रुओं का नाश करेगी। जातक महाधनी एवं पराक्रमी होगा। शनि भी यहां राजयोगप्रदाता है।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक के आत्मबल को तोड़ेगा एवं शत्रु से भयभीत करेगा। पर जातक दुस्साहसी होगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक की आध्यात्मिक शक्ति को नष्ट करेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां सप्तम स्थान में कन्या (मित्र) राशि में होगा। धन, यश, पद-प्रतिष्ठा, नौकरी-व्यवसाय के लिए सूर्य की स्थिति ठीक रहेगी। सूर्य यह स्थिति पति-पत्नी के मध्य वैमनस्य बढ़ायेगी। सूर्य पितृस्थान में ग्यारहवें स्थान पर होने के कारण पिता के साथ जातक के संबंध ठीक रहेंगे।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्नस्थान (मीनराशि) पर होने के कारण जातक को प्रयत्न में सफलता मिलेगी। सम्मान में वृद्धि होगी।

निशानी–जातक विशेष रूप से साहसी व धनी होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति सातवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां संतान एवं विवाहसुख में बाधक है। संतान एवं पत्नी के विकलांग होने का भय बना रहेगा।

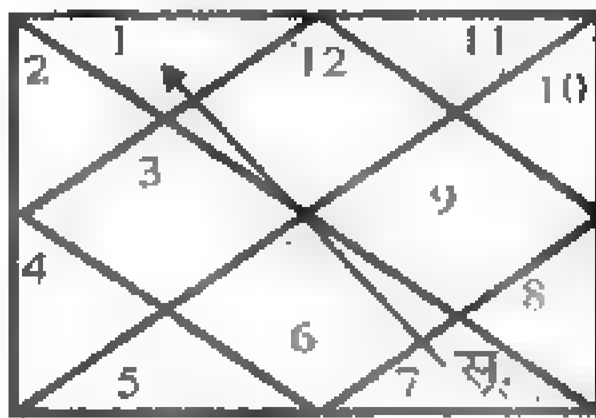
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल कुण्डली को मांगलिक बनायेगा एवं विवाह सुख में विलम्ब या विच्छेद करायेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। सातवें स्थान में 'कन्याराशिगत' यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां केन्द्रगत होकर उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न

स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनी एवं सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक एक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा तथा समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु राजयोग को प्रबल पुष्ट करेगा। जातक के परिश्रम सार्थक होंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र नीच का होने से पेट के रोग में वृद्धि होगी। षष्टेश व अष्टमेश की युति से गृहस्थ सुख में कलह की वृद्धि होकर जीवनसाथी से तलाक (विछोह) हो सकता है।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति वैवाहिक सुख में बाधक है। विलम्ब विवाह संभव है। पत्नी खर्चीली स्वभाव की होगी अथवा पत्नी की बीमारी को लेकर रुपया खर्च होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु एक पत्नी की मृत्यु के बाद जातक का दूसरा विवाह कराता है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गृहस्थ सुख विनाशक है।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां अष्टम स्थान में तुलाराशि में नीच का होगा। तुला राशि के 10 अंशों में सूर्य परमनीच का होगा। सूर्य की इस स्थिति में हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी व यशस्वी होगा। परन्तु पिता का सुख बचपन में नष्ट हो जायेगा। पिता की सम्पत्ति नहीं मिल पायेगी। लग्नेश गुरु यदि कमजोर हो, तो जातक की आयुष्य कमजोर होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धनस्थान (मेषराशि) पर होगी। फलत: जातक की भाषा कठोर होगी। दाईं आंख में रोग होगा।

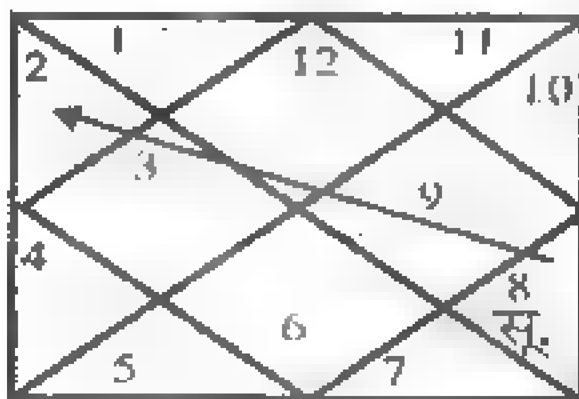
निशानी–ऐसा जातक शहर के प्रतिष्ठित पंडितों, विद्वानों का शत्रु होता है

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति आठवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। षष्ठेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' की सृष्टि करता है। जातक डरपोक होगा एवं उसमें संघर्ष शक्ति की न्यूनता रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीन में सूर्य षष्ठेश होगा। अष्टम स्थान में तुलाराशिगत यह युति वस्तुत: षष्ठेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां नीच का होगा पर अपनी उच्च राशि को देखेगा। षष्ठेश सूर्य के अष्टमेश जाने से 'हर्ष योग' बनेगा। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा एवं दीर्घजीवी होगा। जातक को जीवन में सभी सुख–सुविधाएं मिलेगी। जातक जीवन में लब्ध–प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु अचानक प्राणभय उत्पन्न करता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा। षष्ठेश, अष्टमेश की युति से रोग व शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य नीच का होगा तो शनि उच्च का होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' तथा शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, वैभवशाली एवं धनी होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु अचानक प्राणभय उत्पन्न करता है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को आत्मबल को नष्ट करता है।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्ठेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां नवम स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक भाग्यशाली व धनी होगा। परदेश जाकर कमायेगा। जातक का धन शुभकार्य में खर्च होगा।

ऐसा जातक रत्न, पत्थर, लकड़ी, हैण्डीक्राफ्ट के कार्यों में लाभ पाने वाला होता है।

दृष्टि–नवम भावगत सूर्य की दृष्टि तृतीय स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा पर भाई-बहनों से कुछ विरोध

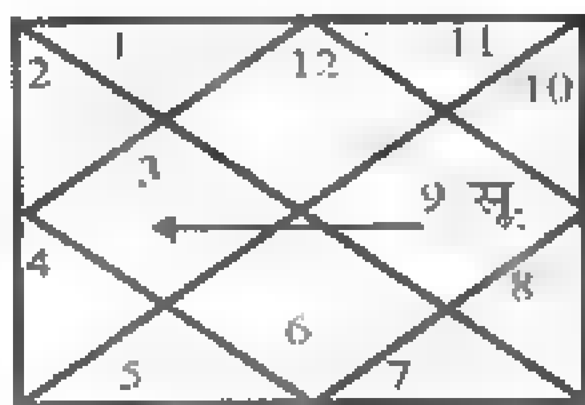
निशानी–पिता की सम्पत्ति को लेकर क केस होगा। पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति नवमें स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं 2 से 4 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां भाग्योदय में सहायक है। चंद्रमा यहां नीच का होते हुए भी जातक महान् पराक्रमी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–ऐसा जातक महाधनी होगा क्योंकि स्वगृही मंगल धनेश होकर जब भाग्यस्थान में सूर्य के साथ होगा तो जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। नवम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनवान एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 26 एवं 32 वर्ष दो चरणों में होगा। जातक पराक्रमी होगा, उसे मित्रों व परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा। जातक समाज का अग्रगण्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु जातक की उन्नति धीमी गति से करायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र भाग्योदय में लगातार दिक्कतें उत्पन्न करेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि तो शनि शत्रु राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति पिता के सुख में बाधक है। पिता से दूरी रहेगी या पिता से नहीं निभेगी। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक का भाग्योदय होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक का भाग्योदय मध्यम आयु के बाद करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु भाग्योदय में लगातार दिक्कतें उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां दशम स्थान में धनु (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को सरकारी नौकरी से लाभ मिलता है। जातक को राज-सरकार से सम्मान मिलता है। जातक को ननिहाल, मामा का सुख ठीक मिलेगा, पर माता-पिता का सुख कमजोर होगा। जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेगा। कोर्ट-कचहरी में मुकदमों के फैसले जातक के अनुकूल रहेंगे।

दृष्टि–दशम भावगत सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (मिथुनराशि) पर होगी। जातक को भूमि, मकान, वाहन का सुख मिलेगा पर इन सब सुखों में उसको संतुष्टि नहीं होगी।

निशानी–ऐसा जातक पिता से अधिक धन, दौलत, यश कमाता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक को रोजी-रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। जातक को शत्रुओं का मान-मर्दन करने का अवसर मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति दसवें स्थान (धनुराशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां जातक को नौकरी में ऊंचा पद दिलायेगी। जातक राजनीति में कुशल एवं धनवान होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को धनी एवं राजनीति में सक्रिय व्यक्तित्व के रूप में चमकायेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। दशम स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक के पास एक से अधिक मकान एवं एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं एवं ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक समाज का अग्रगण्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु 'हंस योग' के कारण राजातुल्य ऐश्वर्य देगा।

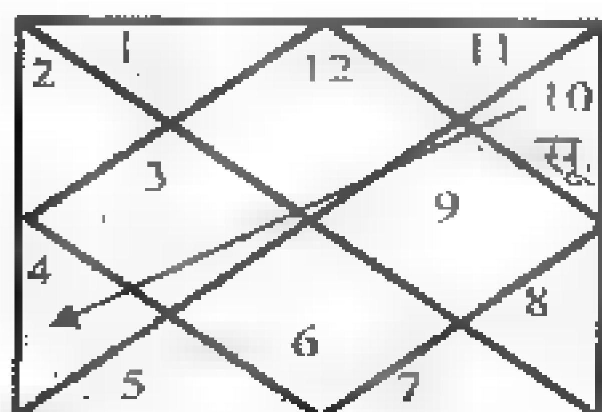
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र राजदण्ड दिला सकता है।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में हो तो शनि सम राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति यहां सरकारी नौकरी में बाधक है। राजदण्ड या अवनति के कारण परेशानी रहेगी। फिर भी जातक बड़ा भारी महत्वाकांक्षी होगा एवं सफल व्यक्ति कहलायेगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु 'राजयोग' में बाधक है।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु नौकरी में अवनति-रुकावट या दिक्कतें पैदा करेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां एकादश स्थान में मकरराशि व शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक के विरोध बहुत होंगे। विरोधी लोग शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा पहुंचायेगें। व्यापार व आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाई का अनुभव होगा पर बुद्धिबल (इष्ट बल) से जातक सभी प्रकार की कठिनाइयों एवं विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा।

दृष्टि–एकादश भाव स्थित सूर्य की सातवीं मित्र दृष्टि पंचम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक विद्यावान् होगा। प्रजावान् होगा। शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलेगी।

निशानी–जातक ईमानदार एवं सिद्धान्तवादी होगा। जिससे उन्नति में काफी दिक्कतें आयेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति एकादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को दिन में 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां व्यापार में लाभ देगी। अति उत्तम संतति एवं उच्च शैक्षणिक उपाधि प्रदान करेगी।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को महान् उद्योगपति बनायेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। एकादश स्थान मे मकरराशिगत यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली, धनवान एवं भाग्यवान होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक उद्योगपति होगा। जातक जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु व्यापार से लाभ, बड़े भाई से लाभ दिलायेगा।

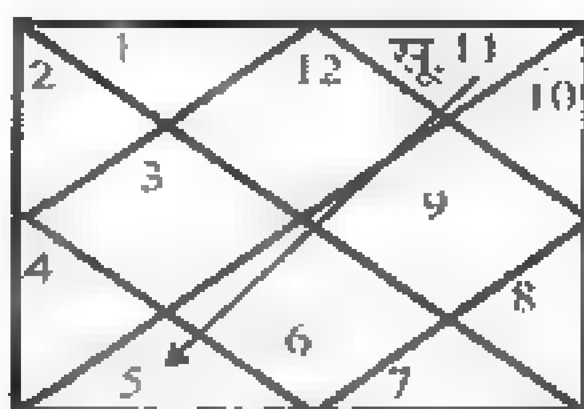
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र व्यापार में अचानक नुकसान, भागीदारी के धंधे में नुकसान दिलायेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। शनि यहां स्वगृही तो सूर्य शत्रुक्षेत्री होगी। षष्टेश एवं व्ययेश की युति यहां होने से व्यापार में बाधा रहेगी। भागीदारी में नुकसान। बड़े भाई की मृत्यु एवं संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु चलते व्यापार को बंद करायेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गुप्त नुकसान कराता रहेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में



सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां द्वादश स्थान में कुम्भराशि में शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी होगा। जातक को ननिहाल व मामा का सुख उत्तम होगा। पिता के साथ बनेगी नहीं। पिता की सम्पत्ति मिलेगी नहीं। जातक के धन का अपव्यय होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (सिंहराशि) पर होगी। जातक के शत्रुओं का नाश होगा।

निशानी–जातक परदेश (विदेश) जायेगा। परदेश में अच्छा कमायेगा। Export-Import से लाभ होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा प्रारम्भ में शुभ फल देगी पर अंत में अशुभफल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति द्वादश स्थान (कुम्भ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के साथ-साथ हर्षनामक योग 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल धनहीन योग, भाग्यहीन योग एवं कुण्डली को मांगलिक बनाकर जातक के जीवन को संघर्षमय बनायेगा। गृहस्थ सुख में बाधा बढ़ेगी।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। द्वादश स्थान में 'कुम्भराशिगत' यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश सूर्य का व्ययभाव में जाने से 'हर्ष योग' बना। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु समूह का नाश करने मे सक्षम होता है। जातक तीव्र बुद्धिशाली, तीर्थाटन करने वाला परोपकारी एवं खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा। उसे जीवन के सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सहज ही होगी। बुध के बारहवें स्थान पर जाने से 'सुखभंग योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बना। फिर भी ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य, लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु 'लग्नभंग योग', 'राजभंग योग' बनायेगा। जातक का परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करेगा। नेत्रपीड़ा में जातक को कष्ट देगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कुम्भ राशि में होंगे। सूर्य शत्रु क्षेत्री एवं शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होगा। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' तथा शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक महाधनी, पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा, परन्तु खर्चीले स्वभाव से धन एकत्रित नहीं हो पायेगा। जातक को नेत्रपीड़ा रहेगी।

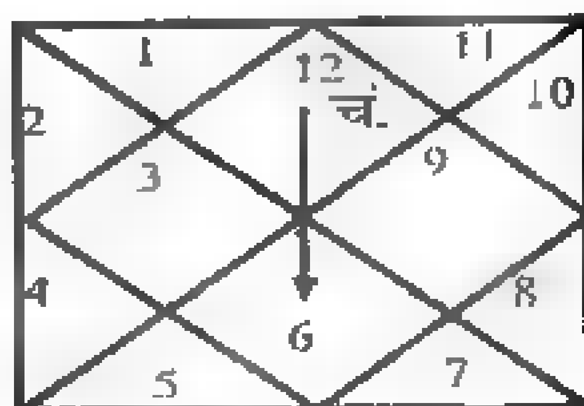
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक को व्यर्थ में भटकायेगा। जीवन के मार्ग कंटकाकीर्ण करेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु अनिष्टि सूचक है।



मीनलग्न में चंद्र की स्थिति

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति प्रथम स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां प्रथम स्थान में मीन (मित्र) राशि का है। ऐसे जातक का जन्म पूर्वजन्म के शुभ पुण्यफल के रूप में होता है। जातक का शरीर व चेहरा सुन्दर होगा। जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। माता का सुख उत्तम होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होने से गृहस्थ सुख श्रेष्ठ, विद्यावान् होगा। बातचीत में कुशल होगा।

निशानी–कन्या संतति अधिक होगी। प्रथम कन्या होगी। पराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक को एक पुत्र का सुख जरूर मिलेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी। इसकी दशा में जातक तीर्थाटन करेगा।

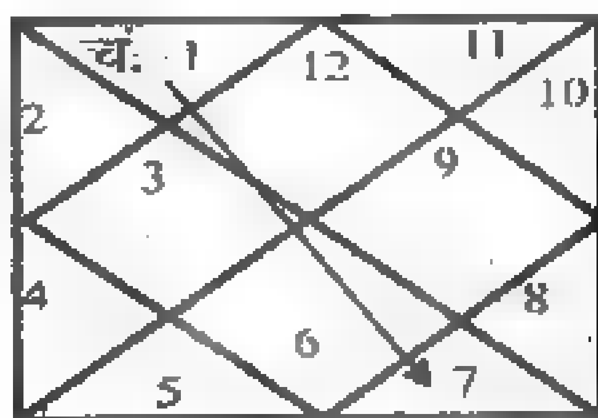
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय में 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति लग्न में जातक को आकर्षक व्यक्तित्व का धनी बनायेगा। जातक महान् शिक्षाविद् होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मीनराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों चतुर्थ स्थान मिथुन राशि, सप्तम भाव कन्या राशि एवं अष्टम स्थान तुलाराशि को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

जीवन में सभी भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज से होगी। परन्तु जातक का सही आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को सुन्दर पत्नी एवं अनुकूल ससुराल देगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चंद्रमा की यह युति वस्तुत पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु यहां स्वगृही होकर बलवान होगा। यहां से ये दोनों ग्रह पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गजकेसरी योग की यह सर्वोत्तम स्थित है। यहां 'हंस योग', 'कुलदीपक योग' व 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक का दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। 'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक की गिनती समाज के चुनिन्दा प्रतिष्ठित व भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ उच्च का शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं कामदेव के समान कमनीय होगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु जातक को अनेक कार्यों में उलझाये रखेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को कीर्तिवन्त बनायेगा।

मीनलग्न में चन्द्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां द्वितीय स्थान में मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को कुटुम्ब सुख उत्तम होगा। धन श्रेष्ठ। आंख, दांत, गला का रोग नहीं होगा। जातक की वाणी मधुर, माता का सुख भी उत्तम होगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक को जलभय रहेगा। कफ प्रकृति के रोग होंगे।

निशानी–'पाराशरहोराशास्त्र' के अनुसार ऐसे जातक के अनेक पुत्र होते हैं। जातक अति धनवान एवं यशस्वी होता है।

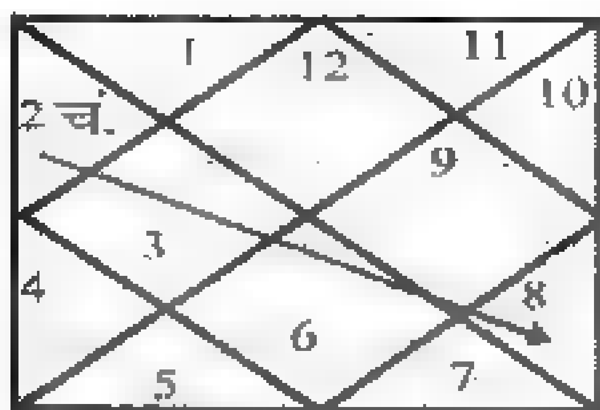
दशा–चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति द्वितीय स्थान में (मेषराशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय से पूर्व प्रातः 4 से 6 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति जातक को महाधनी बनायेगी क्योंकि यहां सूर्य उच्च का योगकारक चन्द्रमा के साथ होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे। मेषराशि में मंगल स्वगृही होगा। फलतः यहां 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां, पंचमभाव कर्क राशि, अष्टम भाव तुलाराशि एवं भाग्यभवन वृश्चिक राशि पर होगी। फलतः जातक महाधनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक बुद्धिमान, विद्यावान् होगा। जातक की संतति भी धनवान एवं बुद्धिशाली होगी।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को भौतिक उपलब्धि एवं सांसारिक सुख देगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्रमा की यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति होगी। जहां बैठकर ये दोनों शुभग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव पर होगी। फलतः जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक की आकस्मिक आपदाओं व दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को राज्य सरकार से मान-सम्मान मिलेगा। अधिकारियों से सहयोग व लाभ मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को मीठी एवं विनम्र वाणी देगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि व्यर्थ के खर्च के प्रति जातक का आकर्षण बढ़ायेगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु उपार्जित धन को नष्ट करेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु धनसंग्रह में बाधक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति तृतीय स्थान में

चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां तृतीय स्थान में वृषराशि में उच्च का होगा। वृषराशि के तीन अंशों में चंद्रमा परमोच्च का होगा। जातक सहोदरों का प्रिय होगा व



मिलनसार होगा। जातक को माता-पिता, स्त्री-संतान, धन, यश, पद-प्रतिष्ठा का पूरा सुख मिलेगा। जातक लेखक, काव्य-प्रिय व साहित्य प्रेमी होता है। उसके प्रशंसक बहुत होते हैं।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की नीच दृष्टि भाग्यस्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय छोटी उम्र में ही होगा।

निशानी–जातक के बहनें व कन्याएं अधिक होगी। ऐसा जातक असहिष्णु एवं चंचल स्वभाव का होगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक तीर्थयात्राएं, देशाटन करेगा। संतति लाभ होगा। विद्या में कीर्ति मिलेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति तृतीय स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। षष्ठेश+पंचमेश की युति में यहां चंद्रमा उच्च का होगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्ब का सुख मिलेगा। जातक की स्त्री-मित्रों से विशेष लाभ होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह वृषराशि में होंगे। वृषराशि में चंद्रमा उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम स्थान सिंह राशि, भाग्यस्थान वृश्चिकराशि एवं दशमभाव धनुराशि को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट-केस, मुकदमेबाजी में सदैव विजयश्री का वरण करेगा।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध कुटुम्ब सुख में वृद्धि, माता के सुख में वृद्धि का द्योतक है।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषराशि में यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। यहां चंद्रमा उ[redacted] का होकर बलवान होगा तथा दोनों ग्रह सप्तम स्थान, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक व्यापार व्यवसाय में बड़ा सम्मान नाम व धन कमायेगा। जातक का नाम समाज में भाग्यशाली, प्रतिष्ठित व सफल लोगों में होगा।

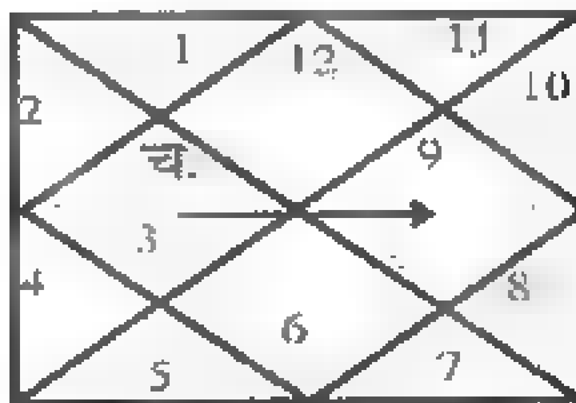
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र 'किम्बहुनानामकराज योग' बनायेगा। जातक को कुटम्बीजनों से लाभ होगा। बहनें अधिक होगी।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि मित्रों से लाभ। जन सम्पर्क से लाभ देगा परन्तु छोटे भाई का सुख कमजोर करेगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु भाइयों व कुटुम्बियों में विवाद उत्पन्न करेगा।

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को कीर्तिवान् बनायेगा।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां चतुर्थ स्थान में मिथुनराशि का शत्रुक्षेत्री होगा। चंद्रमा यहां 'दिग्बली' होगा। ऐसा जातक को जमीन-जायदाद, स्त्री-संतान, मित्र-रिश्तेदार, धन-यश, पद-प्रतिष्ठा एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक को माता-पिता का सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम स्थान (धनुराशि) पर होगी। फलत: जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा। जातक राजमंत्री, राजगुरु के पद को प्राप्त करेगा।

निशानी–जातक को माता का सुख तो मिलता है पर माता से विचार नहीं मिलेगा। जातक मानसिक तनाव में रहता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अत्यन्त शुभ फल देगी। चंद्रमा की दशा में रोजी-रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

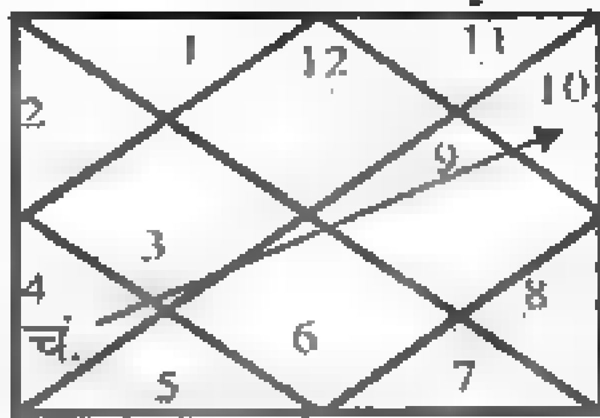
1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़कृष्ण अमावस्या को मध्य राशि 12 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति केंद्र से, हृदय रोग की संभावना को बढ़ायेगी। जातक की माता बीमार रहेगी।

2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मिथुनराशि में होंगे। मंगल का यहा दिक्बली होगा। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव कन्याराशि, दशम भाव धनुराशि, एवं एकादश भाव मकरराशि को देखेंगे। ऐसा

जातक धनी होगा। जातक की आर्थिक उन्नति विवाह के बाद होगी। जातक व्यापार–व्यवसाय में धन कमायेगा। ऐसे जातक की राजनीति में भी दबदबा प्रभाव रहेगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रम व ऐश्वर्यशाली होगा। विद्या एव बुद्धि में तेजस्वी व्यक्ति होगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनराशि में यह युति, वस्तुत: पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां क्रमश: 'पद्मसिंहासन योग'', 'कुलदीपक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलत: जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा। धन खूब कमायेगा। यात्राएं बहुत कमायेगा। जातक का धन परोपकार के कार्यों में, शुभकार्यों में खर्च होगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व भी उत्तम रहेगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र माता के सुख में न्यूनता उत्पन्न करेगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि, भौतिक उपलब्धियों के भण्डार को भरेगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु माता की मृत्यु छोटी उम्र में करायेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को लम्बी बीमारी देगा।

मीनलग्न में चन्द्र की स्थिति पंचम स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां पंचम स्थान में स्वगृही होगा। जातक वाक्पटु होगा। वाणी विनम्र होगी। कल्पना शक्ति प्रखर होगी। जातक उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा। जातक हंसमुख होगा। उसका सोच सकारात्मक होगा। जातक स्वयं यशस्वी होगा एवं उसकी संतान भी यशस्वी होगी। जातक को माता का सुख उत्तम होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश स्थान (मकरराशि) पर होगी। फलत: जातक व्यापार द्वारा उत्तम धनार्जन करेगा। बैंक बैलेन्स तगड़ा रहेगा।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा पर कन्या संतति अधिक होगी। दो कन्या एक पुत्र का योग बनता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में उन्नति प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा–देशाटन होगा। धनार्जन भी होगा एवं यश मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति पंचम स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 12 से 10 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां जातक को सुन्दर संतति व उत्तम शिक्षा देगी।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह कर्कराशि में होंगे। चंद्रमा जहां स्वगृही होगा वहीं मंगल नीचराशि में होने से 'नीचभंगराज योग' बनने से 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव तुलाराशि, लाभ स्थान मकरराशि एवं व्ययभाव कुंभराशि को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। व्यापार-व्यवसाय में धन कमायेगा। पर ऐसे जातक के खर्चे भी बढ़े-चढ़े होंगे।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार कर्क राशि में यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां स्वगृही एवं गुरु उच्च का अत्यधिक शक्तिशाली स्थिति में है। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलतः जातक चहुंमुखी विकास 24 वर्ष की आयु में होना शुरू हो जायेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में उच्च स्थान की प्राप्ति होगी। जातक भाग्यशाली होगा। शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित होगी।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र विद्या में बाधा के साथ जातक कला व अभिनय के क्षेत्र में उभरेगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि प्रारम्भिक विद्या में रुकावट परन्तु जातक बड़ा उद्योगपति होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु विद्या व संतान सुख में बाधक है।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु होने से जातक तेजस्वी विद्यार्थी होगा। उसकी संतति भी तेजस्वी होगी।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति षष्टम स्थान में

चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में सिंह (मित्र) राशि में है। चंद्रमा की

इस स्थिति से 'पुत्रहीन योग' बनता है। महर्षि पाराशर कहते हैं–'पुत्रः शत्रु समो भवेत्', प्रथमतः जातक के पुत्र होवे नहीं। पुत्र होवे तो शत्रु के समान व्यवहार करेगा। संतान के मामले में जातक कष्ट पायेगा। जातक के दत्तक पुत्र होगा। विद्या में भी रुकावट आयेगी।

1	12	11	10
2	3	9	8
4	5 चं.	6	7

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक के शत्रु ज्यादा होंगे। जातक परदेश जाकर बसेगा।

निशानी–जातक के पेट के रोग, मूत्ररोग, डाईबीटिज या चर्मरोग की संभावना रहती है। जातक को उधार मांगने की आदत होगी। जातक कर्जदार रहेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा अशुभफल देगी।

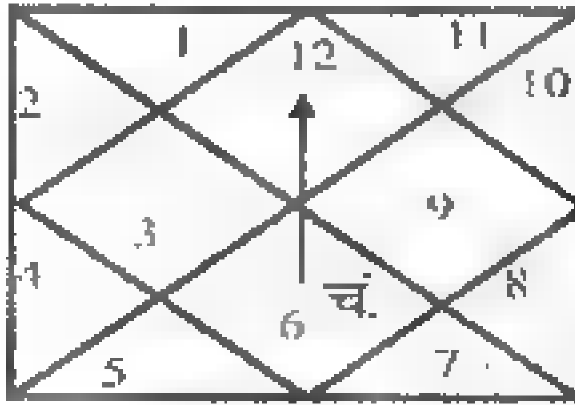
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति छठे स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टमस्थान तुलाराशि, व्ययस्थान कुंभराशि एवं लग्नस्थान मीनराशि पर होगी। चंद्रमा छठे जाने से 'संततिहीन योग' एवं मंगल छठे जाने से 'धनहीन योग' 'भाग्यभंग योग' भी बनेगा। निसंदेह यह स्थिति शुभद नहीं है। जातक बाहर से धनवान दिखेगा पर अंदर से खोखला होगा।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'सुखभंग योग', 'विवाहभंग योग' बनायेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार सिंह राशि में युति वस्तुत पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' बना। चंद्रमा के छठे जाने से 'संतानहीन योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशमस्थान, व्ययस्थान एवं धन स्थान पर दृष्टिपात करेंगे। फलतः जातक को विद्या में बाधा आयेगी। राज्यपक्ष से सरकारी अधिकारी धोखा देंगे। धन की प्राप्ति तो होगी, निरन्तर होती रहेगी। पर धन खर्च होता

चला जायेगा। रुपयों की बरकत नहीं होगी। फिर भी इस योग के कारण जातक का जीवन सार्थक व सफल होगा।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि 'लाभभंग योग' के साथ विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु गुप्त शत्रुओं के प्रकोप को बढ़ायेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गुप्त रोगों को उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति सप्तम स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां सप्तम स्थान में कन्या में शत्रुराशि में होगा। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। वैवाहित जीवन अत्यन्त सुखी होगा। माता का सुख उत्तम। संतान का सुख उत्तम। भागीदारी में लाभ। ऐसा जातक परोपकारी एवं धार्मिक होगा। उसे सामाजिक कार्यों में यश मिलेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (मीनराशि) पर होगी। जातक दीखने में सुन्दर कोमल शरीर वाला होगा।

निशानी–जातक प्रेम विवाह करेगा। कन्या संतति अधिक होगी, क्योंकि पंचमेश चंद्रमा भी कन्या राशि में है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में विवाह होगा। उन्नति होगी। संतान की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति सातवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां संतान एवं विवाहसुख में बाधक है। संतान एवं पत्नी के विकलांग होने का भय बना रहेगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह कन्याराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशमभाव धनुराशि, लग्न स्थान मीनराशि एवं धनभाव मेषराशि को

देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। जातक अपने परिश्रम से निरन्तर उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता चला जायेगा। जातक का राज्य सरकार कोर्ट, कचहरी में दबदबा प्रभाव अक्षुण्ण बना रहेगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–जातक की पत्नी अति उच्च घराने की होगी। ससुराल धनवान होगा। यहां बुध के कारण 'भद्र योग' बना। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा।

4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। दोनों शुभग्रह यहां बैठकर लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गुरु यहां 'कुलदीपक योग', 'पद्मसिंहासन योग' बना रहा है। चंद्रमा यहां नीचराशि गत होता हुआ भी 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलतः जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कारित होगी। जातक के व्यक्तित्व का चंहुमुखी विकास होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक बहुत पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

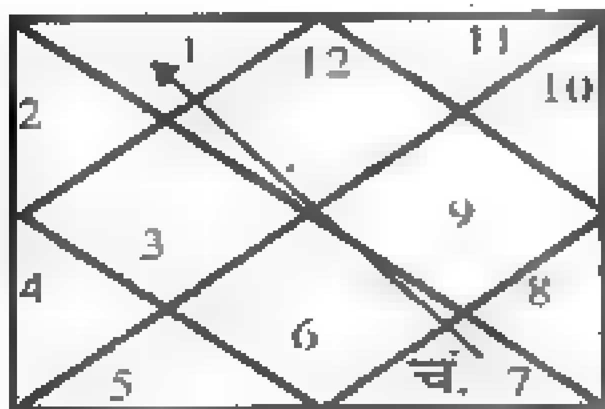
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर उसे गुप्त बीमारी रहेगी।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक का जीवनसाथी व्यापार प्रिय होगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु होने से गृहस्थ सुख में बाधा, जीवन साथी की मृत्यु तक संभव है।

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु होने से जीवनसाथी को दीर्घकालिक बीमारी संभव है।

मीनलग्न में चन्द्र की स्थिति अष्टम स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां अष्टम स्थान में तुला (सम) राशि में है। चंद्रमा की यह स्थिति 'पुत्रहीन योग' की सृष्टि करती है। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक थोड़े पुत्र वाला होता है। जातक को संतान से

वियोग व कष्ट होगा। जातक बाल्यावस्था में बीमार रहेगा। यदि अन्य अशुभ ग्रह साथ हो तो यहां 'बालारिष्ट योग' बनेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धनभाव (मेषराशि) पर होगी। जातक अनेक संसाधनों से धन कमायेगा। वाणी विनम्र होगी।

निशानी–जातक क्रोधी होता है तथा श्वास व दमा की बीमारी से ग्रसित होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा अशुभफल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति आठवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां लाभ स्थान, मकर राशि, धन भाव मेष राशि एवं पराक्रमभाव वृषराशि पर होंगी। चंद्रमा आठवें जाने से 'संतानहीन योग' तथा मंगल आठवें जाने से 'धनहीन योग' तथा 'भाग्यभंग योग' बनेगा। निश्चय ही यह स्थिति शुभद नहीं है। ऐसा जातक बाहर से धनवान दिखाई देगा परन्तु भीतर से खोखला होगा।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'सुखहीन योग' विलम्ब विवाह योग बनाता है। ऐसे जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ता है।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुत पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु एवं चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से क्रमशः 'लग्नभंग योग', 'विद्याभंग योग', 'संतानहीन योग' एवं राज्यभंग योग की सृष्टि हो रही है। अष्टम स्थान में बैठकर गुरु व्यय भाव, धन भाव एवं सुख भाव को देखेंगे फलतः जातक धनवान होगा। परन्तु धन की बरकत नहीं होगी। रुपया परोपकार के कार्य में यात्राओं में खर्च होता चला जायेगा। विद्या में रुकावट आयेगी। संतान संबंधी चिंता रहेगी। राज्य सरकार कोर्ट–कचहरी से परेशानी आ सकती है। सावधानी अनिवार्य है। फिर भी इस शुभ योग के कारण जीवन कांटोभरी सेज नहीं रहेगी। संघर्ष के बाद सभी ओर से सफलता निश्चित है।

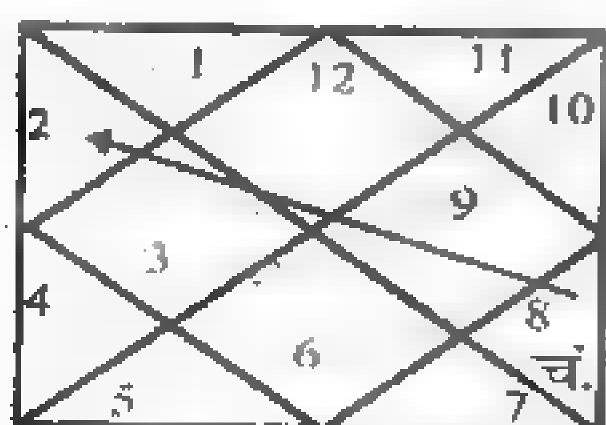
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' एवं 'पराक्रम भंग योग' बनायेगा। जातक धनी होगा, मानी होगा। जीवन में संघर्ष रहेगा।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि 'लाभभंग योग' एवं 'विमल नामक विपरीतराज योग बनायेगा। जीवन में संघर्ष रहेगा। जातक धनी–मानी, अभिमानी होगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु आयु के लिए घातक है।

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु अनिष्टसूचक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति नवम स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां नवम स्थान में वृश्चिक नीच राशि का होगा। वृश्चिक राशि के 3 अंशों में चंद्रमा परमनीच का होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार–

सुतेशे भाग्यगे पुत्रो भूपो वा सत्समो भवेत्।
स्वयं व ग्रन्थकर्ता च विख्यातः कुलदीपकः।

ऐसे जातक का पुत्र राजातुल्य पराक्रमी, विख्यात ग्रंथकार एवं कुल में श्रेष्ठ होता है।

दृष्टि–नवम भाव में स्थित सूर्य की दृष्टि तृतीय भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को भाई-बहन, इष्ट-मित्रों का पूर्ण सुख मिलेगा।

निशानी–जातक के बहनें ज्यादा होगी। जातक को पिता सुख श्रेष्ठ होगा।

दशा-चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

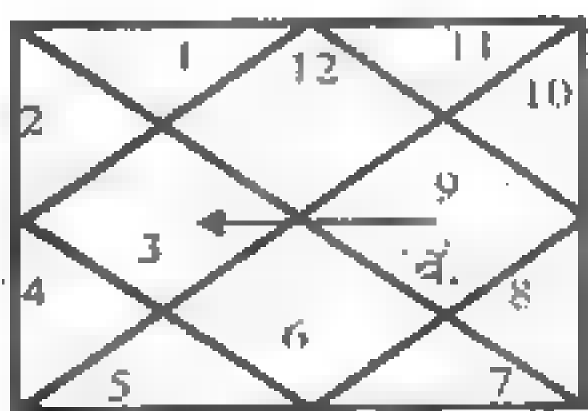
1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति नवमें स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं 2 से 4 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां भाग्योदय में सहायक है। चंद्रमा यहां नीच का होते हुए भी जातक महान् पराक्रमी होगा।

2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। वृश्चिक राशि में जहां चंद्रमा नीच का होगा वहीं मंगल स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा तथा 'नीचभंगराज योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह, व्यय भाव कुंभराशि, पराक्रम भाव वृष राशि एवं चतुर्थ भाव मिथुन राशि को देखेंगे।

फलतः जातक महाधनी होगा। महान पराक्रमी होगा। ऐसे जातक को जीवन में उत्तम वाहन, उत्तम भवन एवं समस्त भौतिक सुख मिलेंगे। परन्तु ऐसे जातक खर्चीले स्वभाव, उदार मनोवृत्ति वाला परोपकारी व दानी होगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक के भाग्योदय में प्रबल सहायक है। जातक महान पराक्रमी होगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। गुरु के कारण 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। जहां बैठकर ये दोनों शुभग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतानें भी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी। जातक अपनी संतान के कारण समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक का जीवन में चहुमुंखी विकास होगा। राजनीति में दबदबा रहेगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा परन्तु पीठ पीछे निन्दा होगी।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक के भाग्योदय में दिक्कतें पैदा करेगा। जातक कठोर परिश्रमी होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ नीच का राहु भाग्योदय में बाधाएं उत्पन्न करेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ उच्च का केतु जातक को तीव्र गति से आगे बढ़ायेगा।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति दशम स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां दशम भाव में धनु (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपने स्थान से 'षडाष्टक योग' बना रहा है। ऐसा जातक संतान अथवा विद्या को लेकर मानसिक तनाव में रहेगा। फिर भी जातक धनी होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार पंचमेश दशमेश दशम में होने से एक प्रकार का 'राजयोग' बनता है। ''अनेक सुखभोगी च ख्यात कीर्ति हारो भवेत्।'' जातक सभी प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करता हुआ कीर्तिवान होता है।

दृष्टि–दशम भावगत चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थभाव (मिथुनराशि) पर होगी। फलतः माता का सुख श्रेष्ठ, विद्या सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

निशानी–जातक अपने कुटुम्ब में श्रेष्ठ व्यक्ति होता है। जातक विद्वान् होता है तथा राज-सरकार द्वारा सम्मानित होता है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक को अकल्पनीय शुभफलों की प्राप्ति होती है। जातक सपरिवार धार्मिक यात्राओं व देशाटन पर जाता है।

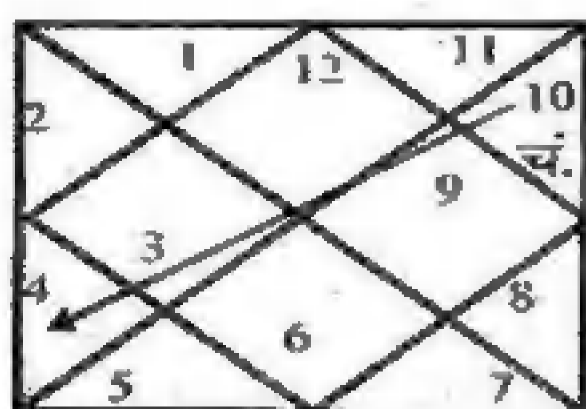
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति दसवें स्थान (धनुराशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां जातक को नौकरी में ऊंचा पद दिलायेगी। जातक राजनीति में कुशल एवं धनवान होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह धनुराशि में होंगे। मंगल यहां दिक्बली होकर 'कुलदीपक योग' बनायेगा। चंद्रमा की 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टियां, लाभस्थान मीन राशि, चतुर्थ स्थान मिथुन राशि एवं पंचम भाव कर्क राशि पर होगी। फलतः जातक समाज का प्रतिष्ठित व धनी व्यक्ति होगा। निरन्तर उन्नति पथ पर आगे बढ़ता चला जायेगा। जातक उत्तम वाहन, उत्तम भवन का स्वामी होगा। जातक स्वयं तो धनी होगा ही पर उसकी संतति भी उसी की तरह धनवान होगी।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध माता का सुख, विवाह का सुख देगा। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनु राशि में यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। ये दोनों शुभग्रह केन्द्र में बैठकर धन स्थान, सुख भाव एवं षष्टम् स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गुरु यहां स्वगृही होने से बलवान होगा तथा क्रमशः 'हसं योग', 'कुलदीपक योग', 'यामिनीनाथ योग', 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि कर रहा है। फलतः जातक का राजनीति में व्यापार में भारी प्रतिष्ठा होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के पास उत्तम वाहन एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धि रहेगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः समर्थ होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक का पराक्रम राजा की भांति बढ़ायेगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को व्यापार में लाभ, पद-प्रतिष्ठा दिलायेगा।

7. **चंद्रमा+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु रोजी-रोजगार में बाधक है।

8. **चंद्रमा+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु संघर्ष का द्योतक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति एकादश स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां एकादश स्थान में मकर (सम) राशि का होगा। जातक की सभी प्रकार की सुख-सुविधा, समृद्धि एवं उत्तम विद्याओं की प्राप्ति होगी। 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार ऐसा जातक विख्यात ग्रंथकार, लोकप्रिय, धन, पुत्र एवं वैभव से युक्त उत्तम व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

दृष्टि—चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव अपने ही घर कर्क राशि पर होने के कारण कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी—ऐसे जातक उच्च महत्वाकांक्षी होता है। अपनी उन्नति के प्रति सावधान रहता है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्रमा+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति एकादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को दिन में 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्ठेश एवं पंचमेश की युति यहां व्यापार में लाभ देगी। अति उत्तम संतति एवं उच्च शैक्षणिक उपाधि प्रदान करेगी।

2. **चंद्रमा+मंगल**—यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धनस्थान मेष राशि, पंचम स्थान कर्क राशि एवं षष्टम् स्थान सिंह राशि को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक निरन्तर उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता चला जायेगा। ऐसा जातक स्वयं तो धनी होगा पर उसकी संतति भी उसकी तरह धनवान होगी। जातक की विशेष आर्थिक उन्नति प्रथम पुत्र प्रजनन के बाद होगी।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति, गृहस्थ सुखों की प्राप्ति होगी।

4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकर राशि में यह युति वस्तुत: पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति होगी। गुरु यहां नीच का होगा। जहां बैठकर ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक की संतति शिक्षित होगी। उसे व्यापार-व्यवसाय में उच्च पद प्राप्त होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

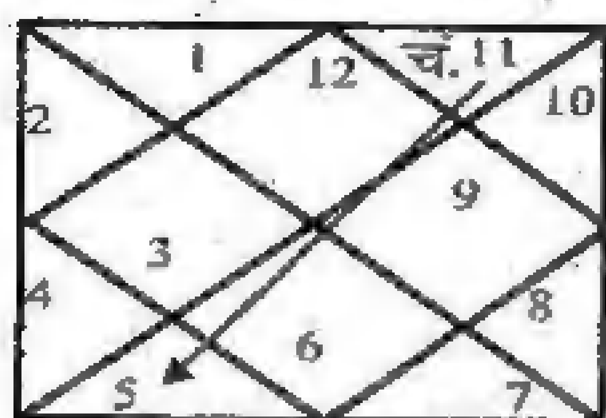
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा। उद्योगपति होगा। बड़े व्यापार से लाभ होगा।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक उद्योगपति एवं बड़ा व्यापारी होगा। बैंक-बैलेन्स अच्छा रहेगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु–व्यापार में अचानक घाटा देगा।

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु व्यापार में रुकावट का द्योतक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति द्वादश स्थान में



चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां द्वादश स्थान कुम्भ राशि में है। चंद्रमा अपनी राशि में आठवें एवं लग्न में बारहवें होने के कारण पंचम भाव के शुभफलों को तोड़ता है तथा 'पुत्रहीन योग' की सृष्टि करता है। पाराशर ऋषि के अनुसार 'दत्तपुत्रयुतो काऽसौ क्रीतपुत्रान्वितोऽथवा' जातक दत्तक पुत्र अथवा क्रीतपुत्र द्वारा सेवित होता है। जातक मानसिक तनाव में रहेगा तथा उसे नेत्र पीड़ा खासकर बाई आंख में पीड़ा होगी।

दृष्टि–द्वादश स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक की माता की मृत्यु छोटी उम्र में होगी। जातक को मामा का सुख उत्तम मिलेगा।

निशानी–जातक के प्रारम्भिक विद्याध्ययन में रुकावटें आयेगी एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में अशुभफलों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति द्वादश स्थान (कुम्भ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के साथ-साथ हर्षनामक योग 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह कुंभराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां पराक्रम स्थान वृष राशि, षष्टम भाव सिंह राशि एवं सप्तम भाव कन्या राशि पर होगी। चंद्रमा बारहवें जाने से 'संतानहीन योग' तथा मंगल बारहवें जाने से क्रमशः 'धनहीन योग' व 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। निश्चय ही यह स्थिति शुभद नहीं है। ऐसा जातक बाहर से धनवान दिखाई देगा पर भीतर से खोखला होगा।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'सुखहीन योग' विलम्ब विवाह योग की सृष्टि करेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। संघर्षमय जीवन जीयेगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यहां यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभग्रह सुख स्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। द्वादश स्थान में इन दोनों ग्रहों के जाने से क्रमशः 'लग्नभंग योग', 'राज्यभंग योग' एवं 'संतानहीनयोग' की सृष्टि हो रही है। वस्तुतः ऐसे जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में अकेला सक्षम होगा। जातक को प्राकृतिक अपघातों व दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सहज में होती रहेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र सरलनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा। जातक का पराक्रम भंग होगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि भारी खर्च करायेगा। 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु संतान सुख में बाधक है।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु विलम्ब संतति करायेगा।

